नो प्रातकोपंकजु मोतिय़कोसुपू ल्योकदू
मिलानों ६७३ घरघरडोलतुदीनेहा
बजाचतुजाइ दिय़ेलोभचसमा चषनुलघु
वडोलषाइ य़हलोभकोअधिकाईपर
विककविकीऊक्ति ठौरहोठौरघिघा
फिरैलघुताजितहींतिनआपुपकासै जाचे
वहीपरजाइवडाईहि हुमोतिदू
ग्रैसोधरैचसमानरुनैननुपेम
जदपिहैअतिसूछिमहूंवरय़ाहित
रघनासे ६७४ कालवूतदूतोविनाजु
नग्रांनऊपाइ फिरितौकैरौलसेपाकेपैमल
राइ य़हपरस्वाछिकमोतिपेंमकपरि
काकरिवेकौऊपाइकविकौऊक्ति
राऊकौवनोय़ेचोरेकौऊसोतौविनु
तकेंहूंवनतुनवांनिहैं त्यौपेंममंदिर
लवूतदूतोतारिवीचदिय़ेंविनुकोहोकैसे

सेवे रूप कुरूपन कोइ। मन की रुचि जेती जितै तितै
रुचि होइ। टीका। यहपर स्तावि क कवि की उक्ति न
क्रामे ह्में सबी को वचनु लाइ कासों। सुंदरस
को होकिहिं कामहै जो अपनें चित में नहि ध्यावै। जो चित
मा ऊकुरूपु चुभ्यौ तौ वहै ऊरकौ अति मोदु बढ़ावै। हो
सभै ईं सनेसव सुंदर रूपु कुरूपु न कोउ लखावै।
जो जितौ जिहिं ठौर बसै रुचि सो तिहिं ठौर तितौ रुचिप
मूढ चढ़ाऐं हूं रहै पस्यौ पीठि कच भार। रहै गरे
रासि वौ त उहि ये पर हास। टीका। यहपर स्तावि क
वे की उक्ति। काहू के मूढ चढ़े रहि ये न ये रो गि
चित मैं चतुराई नौ कौ म तौ रहि ये जो गोरे परि तौ ली
ध्यधि के गरुवाई। मूढ चढ़े हू पर रहै पाछै कि वध न
ति के सन्निपाई। देखो रहो जो गोरें हूं परें तौ विहार
यौ पहराई। ८७०। भावरि अन भावरि भरें
कवाइ। अपनी अपनी ओर वे को कुटैन सहज सु
यहपर स्तावि क कवि की उक्ति। काहू

आइयैतौ ग्रौ गुन्न गहा कौरे॥ लोक लोक लोपेये व
हीकौ पीकजा हि ठौक वतायें कौ ना हि चौकैर
लाज जन कहे कौ ऐकौ ले कौ ले हि रे कौ न कटे कौ
सुनौ चैठैनौ वदियैमहा कौरे॥ संगति प्रसंगते वु
वुरौ भलौ होइ देवी ज्यों सङ्गा च्छ संगति कौ संगति
कौरे॥६७॥ दोहा॥ घरतघरत संपति सलिल
नरो जुवढि जाइ॥ घरतघरत सुलि फिरि घटै
मूल कुमिल्लाइ॥ टीका॥ यहपर स्लोकके
अर्थ कौ विचा॥ सदन सरोवर मैं सुधकी हिलो
रौं संपति सलिलु ज्यौं हीं त्यौं हीं सरस्वा तुहोइ यह
टसचु जगतु वसौ न तुहै मन हूं सरोजु त्यौं हीं
अधिका तुहै॥ जव ओनि पेरे कौ ऊआ तपुआदि
नल कौ प्रमौनु फिरि नि घर तुजा तुहै॥ कहै क
यहकौ मलु वरनौ सुवरनौ क्यौं हूं पै न घ
मूल कुमिल्ला तुहै॥६८॥ दो॥ सैमैं सैमैं सु

ज्ञानपरकछू ज्ञाजुलोकाकू नपाकलहोइ ना
ज्ञगाधइहांलगिकैसैंकूंकोउ नपावतुघोहे मेरु
सापनुकेमनवूडेज्ञनेकज्ञचंभोमहोहे ७
गनुकोंवहप्रेमसमुद्रयगारसदोहे ६५
दोषुलगेसवनुकहतिं तैवैंन कुटिलवंकपु
भयेकुटिलवंकगतिनैंन यहपरस्ता
संगकोदोषुलगेयहदृष्टांतकविकीऊक्ति
ज्योरतेजैसेईसंगरहैसुभलीविधिहै ६६
गतिदोषुलगेसवकौंविधैयहज्ञादिज्ञनादि
सकैहैजगमेंयहबातप्रतज्ञप्रवीननिज्ञंगहैं
भकुटिनिकोसभुपाइकैंनैंननुहूंगतिवंकगहीहै
संगतिसुमतिनपावहीपरकुमतिके
यहमेलिकपूरमेंहोंगनहोइसुगंध
परस्तावि कजोदुरबुद्धिकेठारमेंपरेहोताकोसं
नाहींहोतताकोदृष्टांतकविकीऊ

चेोगरुचेो विधिताकोवटै जगतेसोइतोरा ना
विनुजानैत्रजानकेपैरहत्राधुलैहैनहिचोरा
सरोगतैकाहूँकपूतैनेछाडैराकपूर
रासीतलताईसुगंधघटैयहकोउकोरोजि
निभोरा
केसेछोटनरनुतैसरतव
नुकेकांमामटैराद्मामोजातुकेांकाहिचूहाके
यहपरस्तात्रिकछोटैतैवेउकीगरजनसेरे
कीउकि जाकोजितोजगदीसरचेो
केरूवैसिरतेतोईभोरो वातविचारियेहे
अवृथांमतिसोचुविचारो छोटेतेकांमु
तोउसाहेसुकेपचिहारो कोटिकरोपरिचूहेवि
मोहूंमटैराजहिजातुनगारो
सुदेसनरत्नवतहुंनिरकवांनि विभवसतर
नरनरमविमोकीसांनि यहपरस्ता

करोकुवतजगकुरलतातजोनदीनदया
दुखीहोऊगेसरलहियवसतच्छभंगीलाल
यहभक्तकोवचनुभगवानसौं चाहतु
हौंग्रपनैहियमांऊवसायेातुम्हैप्रभुजैसेंहूतैसैं कै
नकुवातकरोसिगरोजगसोचितयेकहूचौहैनवै
सैं हौंकुटलाईतजोनकृपानिधिजौंनतुहींऊपै
जियग्रैसैं दीनदयालकहावतहौंऊसूधौभयेंवहि
होतुजैसैंपर होवनेवैसैंप्रभुसुसरव
दूधुरहचीजांनि रूपरहचैलगिनदैनागन
सबजगचांनि को यहपरस्तविकसूमनैकी
रफेपेषरचुचधिकभयोकविकीऊक्ति
सुंदरिसुहाईसुकुमारिससिवदनीकीसोभा
निकाईकविकेहकोववांनिवैनननजिठांनीसा
सनिहरविसिहातिसवैअतिसंगातियेकैंचाईवैस
सवै

यनेंघरिआवैतौसबकीपूजाकरीये॥
जातेंअतिथसबकोगुरुहै॥तबकागद
हीमित्रकछुपयामूसाकीपूजाविशेष
करो॥जातेंयहबडोधर्मात्माहो॥दया॥
कोपात्रहै॥हिरणकयाकोनामहै॥सम
स्तमूसनकोराजाहै॥याकेगुनकीस्तुति
सबनागसहंश्रमुखकदाचितनकरिस
कै॥यहकहिचित्रग्रीवकीकथासुनाइ
जैसेचित्रग्रीवकेबंधनछिडाये॥यहसु
निमथरआदरसोंपूजाकरियहकही॥हि
रंन्यकअपनोइहबनआइबेकोकारन
कहै तबमूसाकहतहै॥सुनो॥तबाद
चंपानगरीमैसंन्यासीकैमठहै॥तहांच
ड़ाकर्नसंन्यासीरहै॥संन्यासीजिआवो
त्रंनरात्रिआनेमैंधरिराख्यो॥आपुसोवै॥
सोवहअनकंकूदिकूदिखाउ॥पीछेवा
दडाकरणकोमित्रवीणाकर्णआयो
तादिनवासेंबातैंकरतमिरेकराइबेकों

लाठीठोकी ॥ तबबीणाकर्नेकही मेरी ॥
बातनाहीं सुनतहै ॥ सुतुम्हारो चित्तक
हींहै ॥ तबचड़ाकर्नेबोल्यो ॥ मित्रतेरी
बातसों बिरक्तनांही ॥ परिदेखियामू
सामेरीसिखाकौन्प्रनषातुहै ॥ तबबी
णाकर्नेकही यामूसाकोबलुथोरो
येतोऊंचोऊदतुहैसुकोऊकारणाहै
॥ श्लोक ॥ नाकस्माद्धुवतिश्वधः कमेषलु
वचुंबति ॥ पतिनिर्देमालंग्रहेतुस्तत्र
सवष्यति ॥ टी० ॥ कहउहींजातेंतरुण
श्रीबूढेनरीकोंगाढोआलिंगनुदैकै
सयकरिचुंबनकरै शुकोनेऊकारन
बिनानकरै ॥ यहसुनिचड़ाकर्णक
हतहै ॥ तथोकांगोडदेसमेंएकबोमां
बीनामनगरीहै ॥ तहांचंदनदासएक
बनियांबसै ॥ सोवहवृधु वैकोधनके
मदकरिकामव्याप्तभयो ॥ तबकाऊ
एकबनियांकीबेटीलीलावतीनामदि

तहें ॥ गोदावरी नदी कैं तीर बड़ो
येक सेंवरि को रूष है ॥ तहां दसो
दिसा कैं पंछी अनेक आइ विश्रां
मक रहैं ॥ तहां येक समैं प्रात काल च
क्रमा के अस्त होत ॥ लघु मतनक
नामक वा ॥ जाग्यो सो एक जंभक
रूप व्याध आवत देख्यो ॥ सो न जा
नीये आगैं कहा होइ जब व्याध
आपणे निकट आवत देख्यो त
ब व्याकुल होइ न फिचल्यो ॥ ३३ ॥
दो० ॥ जाते डरै कहीं हिये नय ॥ तथा
रोग कमूर्ष ही कों व्यापतु है यं डित
नकों न हि व्यापतु ॥ अरु जो विष
ई संसार है तिनकं सोक न यकी
यो चाहिये ॥ ३४ ॥ दो० ॥ नित्य नु चि
विचारै मरण : व्याधि : सोक : इ
न महि मेरैं आजि मेरे मति कछू
होई ॥

यक रिएक वात कहो ॥ इ० ॥ टी० ॥
अहो सुबुधी होय सो काव्य शास्त्र
को विनोद करि दिन गमावे ॥ औ
रजो मूर्ष होइ सो कलह निद्रा क्रोध
इन करि दिन गमावे ॥ तातैं तुम्हारे
कौतूहल कुं संतोष कौ चित्र कथा
अरु सुबुधि कछुवा की कथा कहे
तऊं ॥ तब राजपुत्र बोले कहो जुत
ब विष्णुसर्मा कही सुनऊं पहलैं
मित्रलाभ कथा कहतऊं ॥ इ० ॥ टी०
जो उपाय करि हीन होइ ॥ अरु चिंत
करि हीन होइ जो वाके बुद्धि होइ
तो वह बुद्धि करि सर्व कार्य सिद्धि
करहि ॥ जैसें कवा कछुवा मृग
मूसा इन बुद्धि ही करि कार्य सा
ध्यो ॥ तब राजापुत्र कहत भये यह
कैसी कथा है ॥ तहां विष्णुशर्मा क
हत भये ॥ इ० ॥ टी० ॥ विष्णुसर्मा कह

चंद्रकोप्रकासअंधकारकोहरै॥जैसैं
बुद्धाई रूपकोहरै॥जैसैहरिकथाय
पकोंहरै॥जैसैंजाचंगासबगुणको
हरैं॥ तातैंहूंवौरकेअंनकरियेट
काहेनरैं॥यहमृत्यकोकारणहै॥जु
परायेअंनकरियेटकौंसंतोषकरै॥
यहनीतिबडोदूषणहै॥जोधोरेय
दियंडितकहावै॥मोलकौलीयै॥
मैथुनकरै॥ पराधीनभोजनकरै
एकेवलदोषहैं॥औरअैसेंप्राणी
कोजीवनमरनतुल्यहै॥बकुतदि
नपरदेसरहै॥परायैभोजनकैरेपर
घरसोवै॥अरुरोगी॥इनकोजीवन
मरणतुल्यहै॥जोमरैतौविश्राम॥
यहविचारुकरिवहआरेपरकोअं
नहोंतेनलागेो॥जातेंलोनछुधितैं
छुधिचलै॥ लो

मंथर बोले मित्र हिरण्यकतुम बकुसं
ग्रहकीयो ताकोयहदोषहै ॥ स्तोक
उपार्जितांनामर्थानी त्यागएवहिर
क्षणं ॥ तडागोदरसंस्थानां परिवाह
मिवांभसा ॥ टीका ॥ मंथरकहतहै सुनो
हो जातेंकष्टको उपार्ज्योधनको दान
करिये ॥ इहैवाकीरक्षा जैसेतालज
लकरिभरियेपीछेंपानीका टिदीजि
तबहीवरहै ॥ अरुअनेकष्टकरिपा
योद्रव्य प्राणछुतेगरुवो त्रैसेद्रव्य
कीएकैगति तातैहिजुदांनकरिये
औरबातकीबिपत्तिहै ॥ अपनेंअर्थ
छांडियरायेअर्थधनबिदवै सुजैसे
बेगारीभरवहिबेकोश्रमपावै फल
कछुनांही ॥ औरद्रव्यको दानभोगुनो
ही तिहिद्रव्यकरिजोधनीकहावत
हैतो धनकरि हमकु धनीकहिन
होहि ॥ दांनभोग नचाकोंनहमको

वसेषयहजुगयेतेंवाकोअधकहषाजा
तेबचनसहततेंनागबिनाज्ञानाक्रिमा
सहतसूरहाःत्यागसहितधनायेचाि
कर्लतेहोजातेनोतिबिषयहकहीहो
जोसंग्रहसदाकरियेअतिसंग्रहनको
जोअतिसंग्रहतेंधनुषकरिस्वारअपुह
मूढोतबहिरनकहोयहकेसोकथा
होमंथुरकहतुहोकिल्पानकटमेविरा
धनामआधरहोसुयदिनसिकारकोबे
धपेतकेबनमगयोजाहमृगमारो॥
माहिघरकोआवतयेडमेयकसूकरदषे
रिषिमृगकोनूमिपरिषिसरकरिसूकर
मारोतबसूकरोहआयगजेवतहोय॥
व्याधकेगुह्यस्यालबिषमारोजातेआ
धसूवोतातेनोतिबिषकहीहोपानोक
रिअनिकरिबिषकरिहथोरकरि॥
मुषकरिबिगकरियबतेपरिहतनेमे

धिरावनाम स्मारन आयो॥ आहार फिरत
मृग सूकर व्याघ्र॥ एतीन्यो देषे॥ विचा
रतभयो॥ बहुत षावेकों पायो॥ जैसें दे
हकों अन विचारे अकस्मात कुष आवै
तैसें भुक कुं आवै॥ अरु भुक को दीन
ता करै॥ कष्ट सहे सु अधिक श्रेष्ठ इन
के मास करि बहुत दिन मेरे आहार हो
इहै॥ एक मास मनुष्य ते॥ दोइ मास मृ
गते॥ दोइ मास सूकरते॥ एक दिको॥
आहार धनुष की जिह करि हों॥ तो यहते
धनुष की जिह षाउं॥ यह विचा करत ध
नुष की जिह को गो मांषा त॥ जिह दूटी
गो मांजो रसो छाती मे लाग्यो॥ लागत
ही स्मार मुवो॥ तते हों कहत हों अति
संग्रहन की जे औरजुषाइ॥ जुदे इ
सो इधन को धनी जानिये॥ अथवा
मूवे पर वा की स्त्री वा धनु को जो गत्रो
रखो न करै॥ अबयह रहो जो बात गई॥

ताकौनबिचार।जोतेजुबस्तपाइयेतहो
इ।सुनाहीपाइबेलाइका।ताकौंवांछोजो
गई।गईबस्ततावकोसोकनकरै।आपदा
तेमोहनपावै।तातैंमित्रतूसदामोहते
रहतहोइ।जोतैंमनुष्यमात्रकूपढि
यढिमूर्षहोतहैं।तातैंक्रियावंतहोइ
सोपंडित।जैसैंरोगीकौंनीकौंबिचार्यो
औषदनामहींलीयेंरोगकौनासहोइ।
पायेतैंनासहोइ।तातैंमित्रयादसोंधी
तिकरिये।जातेराजा।कुलबधू।प्राण
सेवक।मंत्री:दंत:केस:नष:मनुष्य:।
एसबठौरछोडैसोनानपावै।यहजां
निबुधिवंतहोइसोनछाडै।जोछाडैतौ
कपूतकौमतहै।औरकाग:कपूत
मृगऐआपनीठौरनछाडै।आपनेहीठौ
रमरै।औरसिंह:सापुरुष।हाथीऐठौ
रछाडिंजाइ।तहांईबडाईपावै।जातैं
सूरअहंकारीवाकौंआपनौनपरायै।

जादिसमेंजाइसोईआपनो॥बाऊबलक
रिआपनोकरै॥जैसेंसयघजाबनमेंजा
इतहांहीहाथीमारि॥वाकेलोकुतेआ
पनीहीप्यासबुझावै॥जैसेंकूवामेंको
मीडकासरोवरकोमल॥आपहीउपजे
जैसेंउदमीपुरषकोंसबसंपदाआप
हीआवै॥औरसुषआवैतोनोगवै॥दु
षआवैतोनोगवै॥जातेंसुषदुषचक्र
कीनाईफिरतहैं॥जातेंजोउछाहीहो
यउद्यमीहोय॥चिंतातेंरहितहोइ
क्रियाबिधिकोंजानै॥जाकोंदुषन
व्यापै॥ऐसेपुरुषकोंलछिमीआयु
हीआवै॥औरसूरमाअर्थकूंबिनाब
डोसनमंमुपावै॥उचोयदपावै॥धनवं
तलोनीहोयतोकूंअचूकाकोंपावै॥गु
णतेस्वभावहीतेनहैंजैसीसिधकीसो
नाजैसेंसोनेकूंकेअलंकारकरिनहोइ
व करवोजोबडोमनमानुदीज्यैतोसिं

घकौमोसनमानुहोतहै॥तातैंहिरन्यक
धनगयेसुषगयेदुषकाहेकोंमानतहै॥
जातैंधनकीगतिगेंदकीसीहै॥छिनदेहा
हाथआवैछिणमेंनसाइ॥जातैंनीतिवि
षैयहकहीहै॥देषिमेघकीछांह॥नीचसो
प्रीति॥हरेनाजकीन्हमिजोवनकौमद
धनु॥इनकोनोगयोरहीकालहै॥जातैंज
बहीजन्महोतहै॥तबहीमाताकेस्तन
इधतैंभरतहैं॥औरजिमहंसस्वेतकीये
सुवाहरेकीये॥मोरचित्रबिचित्रकीये
सोमेरेकंजीवनकोउपाइकरिहैं॥और
धनकौकौतकसुनो॥उपराजतैंदुषाराषि
येदुषसों॥बकुतबधेतौमोहकरै॥धनक
बकुसुषनकरै॥औरजोधर्मकोंधनवांछ
है॥जातैंजोधनकीबांछाछांडेसोईनलौ
बहैसबतेबडोधर्महै॥जातैजोकीचलगा
इषेवै॥तातैंजुनलगावैसुनलो॥औरजै
सेंमासआकासमेंपछीषाइ॥भूमिमैंबाघ

स्यारषांई॥ जलमेंमछरीषांई॥ तैसेंधनकौं
सर्वचनये है॥ और राजाने॥ चोरते॥ अग्नि
ते॥ दुर्जनते॥ धनकौं सदाभयहै॥ और रा
वकौउपराजिवोदुष॥ तामेयहबडो॥
दुषजितनीयंछपातितनौहोइ॥ जातेंव न
डैकष्टकरिधनपाव्हेजे॥ बडेकष्टकरि
राषिये॥ गयेतेंबडोदुष॥ तातेंधनकीबां
छानकरिये॥ बांछाकैंछाडैं सबैठाकुर
जहांतेंबांछाकीन्ही तहांतेंसवकभयो
जेबांछाकीनी तौआगेंऔरहोइ॥ जो
वांछाडैतौसुष॥ जोभावीलिष्योहोइसो
ईहोइ॥ जोभावीनांहीसुनहीं॥ आगेंबकु
तकहाकदिये॥ हमारेमनहैतेंमित्रह
महिमिलिइहारहैं॥ जातेंमरणताईथी
तिरहै॥ जोगउपजैतबहीनसाइ॥ दान
निसाकदेहिपैअसाधपैंनहोइ॥ तबका
गकहैतें॥ तबकागकहतहै॥ मित्रमं
धरतधन्यहै॥ आमेकोलाइकहै जा

दा तैंमहांतही आपैंतैंउधारिबेकौंसमर्थ
होंहि॥जैसैंहाथीकीचमैंअटकै तौ
हाथीहीयैंकढै॥और नृमिमैंसोईपु
रषसक्तिकरिबेलाईकहै॥साधनमै
सोईनलो॥ जाकैंधारतैंजाचग॥अ
रुसरनागत॥अरुअतिथ॥निरास॥
होइबिमुषनजांय॥तबयहबिचार
करितीभ्यो॥ कागकछूहामूसा॥आ
यनीईंछाअहारक्रीडाकरिसंतुष्टभये
ऐकत्ररहहि॥ तहांआगैंचित्रांगना
मा मृगकाऊकोडरपायेआयमिल्यो
वाकैंपीछैंव्याधआनदेष्यो॥देषिमंथ
रजलमैंपैठो॥मूसाबिलमैंगये काग
रूषपरबैठो॥ तबकागहरिलोदेषतो
कोनुनांही॥तबकागबोल्यो॥तबका
गबचनश्रुनिसबैएकठौरबैठे॥तब
मंथरकह्यो मित्रमृगनी कैहो॥सुषते
आयेहो॥ अहारकरऊ॥सुषतेपानी

पीवऊं॥ इह बनमैंरऊं॥ सनाथकरऊं
तबचित्रांगकही॥ व्याधकेडरपाये
उमरेपासआयो॥ होउमसोमैत्रीयकी
यचाहतहों॥ तबहिरण्यककहीहम
सोंमित्रताहैहीं॥ जातेंयुत्रसोंसंबंधीसों
औरजासोंपरंपराचली आइहोइ औ
रजो॥ आपदातेराखिलेई॥ यचास्यांमे
त्रैहै॥ तातेंजेमैंआपनेंघररहियेतैमैंरहों
यहसुनिमृगयानीपीयो॥ आहारुकरि
सुषतरिबेवो॥ तबमंथरकही मित्रकों
नकरिडरपायेहो॥ तबमृगकहतहै मि
त्रयानिर्जनबनमैंव्याधाआयोहै॥ और
कलिंगदेसमोंरुक्मांगदराजारहतुहै
सुदिगविजैकरतचंद्रभागानदीकी
तीरडेराकीयेहैं॥ सुकालिप्रातही
यासरोवरकोंआयोचाहतुहै॥ यहसु मे
न्यो॥ तातेंइहांकोरहिबोनतो नांही
यहजोंनिश्चियेसोकरऊं॥ मंथर

डरकरिकही॥तोमैंऔरसरोवरजांव
काकमृगकही॥लीवातजाकु॥तब
हिरन्यककहीं॥यापानीमेंरहैतोउब
रोयेंडैमेंजातकेसेंउबरिहो॥यहकही
हेजुपानीकेजीवकोंपानीमेंबलुहै॥
गरुडपरिरहैतिनकोंगरुडहीबलुहै॥य
यादेकोंअयनीभूमिबलु॥राजाकों
आपनोहीबलु॥मित्रमंथरयहउपदे
सकरि॥जैसेंबनियापुत्रआयनी
श्रीकेरतनयांनयीडतदेषिआपुही
डुबीलयो॥जैसेंतुमकुडुबीकोहै॥
मंथरकहतहै॥यहकैसीकथाहै मूसा
कहतहै॥ कनोजदेसमें॥वीननगरीमें
बीरसेननामराजाहै॥तिसवीनपुरनग
में॥तुंगबलनामपुत्रअधिकारीकी
या॥सोतरुणमहाधनी॥नगरमेंफि
रतएकबनियांकीस्त्रीदेषी॥देषिआ

रिविरहकरिदुषीनयो॥इतीपठाई
लीलावतीकुंराजापुत्रकोदेषिका
मव्याप्तकुई॥वाहीकेध्यानमेंरही
जातेंस्त्रीकेकोउप्रियहैनकोउअ
प्रियहै॥जिसेंगाइबनमेंनयनमेंचि
णचाहै॥जैसेंस्त्रीनयेनयेपुरुषचा
हैं॥पीछेंइतीगई॥जायराजपुत्रके
समंचारुकहे॥इतीकेबचनसुनि
लीलावतीकह्योकुंपतिब्रताहो
जातेंश्रीसोईपतिब्रताजुआपनें
घरबारमेंसमझैचउरहोइजोपुत्र
वंतीहोइ॥भरताकोंप्रियहोइ॥अ
रुजोनतीकोंप्रियहोइ॥सोईपति
ब्रता॥सोअस्त्रीनहोइजातेंनती
सुषीनांही॥अग्निसाषिकरिव्याहे
सुनती॥श्रीकोंगतिहै॥तातेंअ
होइतीजुनतीमोकोंआगपादेइशु
भकरौं॥तबइतीबोली॥अहोयह

वातसौसत्यही॥ मुनिकहीहैसत्यय
हबात॥ तबसुतीआयकहीराजपु
त्रसों॥ तबराजपुत्रकहतहैसुती
कौंनेउपायदेइ॥ तबसुतीकह्योउपा
यकरियै॥ जातैंजोउपायतैंकार्यहो
इसुपरक्रमतैंनहोइजैसैंयेकस्पा
लहाथीकीचमैंअटकाईमास्यो॥
राजपुत्रकहीयहकैसीकथाहै॥ सु
तीकहतहै॥ ब्रह्मारंन्यबनमेंयेकक
पूरतिलनामहाथीरहै॥ ताकोदे
खिसबस्यालबिचारी॥ जोयहहाथी
कैसेकैंमरैतोहमकौंमासचारिको
अहारहोइ॥ तहांयेकबुधस्यालक
हीयाहिउपायकरिहौंमारिकैंआ
गेंयहस्यालहाथीकेनिकटजाइंड
वतकरियहकहीदेवहमकौंसु
दिष्टिकरऊ॥ तबहाथीकहीतूकौं
नहै॥

स्यातनहों॥ सबबनवासीमिलिहोंतम
येपठयोहौं॥ यावनमेंहमारोराजानां
हीं॥ तातेंयाबनकोंराजातूहोऊ॥तु
मसबगुनयुक्तहोऊकुलीनहै॥ बंधजु
क्तहोइ॥ आचारवंतहोइ॥प्रतापी
होइ॥ धर्मात्माहोइ॥ नीतिकोज्ञाताहो
इ॥ इनगुनयुक्तहोइसुराजाक
रियो॥ औरजो पहलेंराजानीकोहो
इ॥ तबधनकोरश्रीकोसंग्रहकी
ज्ये॥ जोराजानीकोहोइतो॥ संग्रह
कीज्ये॥ औरप्रांणीकोंमेघअक्ष
र॥ तिसोराजाअक्षरामेघबिनप्र
जाजीवेपनराजाबिनाननजीवे॥ जा
तेंडंडकेडरतेधर्मतेंसबधर्मरहत
हैं॥ जातेंउबलतीरोगी॥ दलिद्रीश्रे
सनरताकीसेवाश्रीराजाहीतिक
तहें॥ जातेंजेसेंलग्ननटरेंतिसेंवे
गिचलते॥ अलेषकुकरियेयहक

हस्यारच्चल्यो॥ हाथी राजकेलोभ
तेजिहयेडेस्यारगयो तिहीयेडेचल्यो
मारगमेंजातकीचमेंअटक्यो॥तब
हाथीबोल्यो मित्रस्यारअबकहा
कीजे॥ह्यांतोअटक्यो॥तबस्यारक
हीमरीपूछकेकेसयकरिआक॥
जिनकीतोप्रतीतिकीनी॥जातैंसा
साधुसंगतिकीजैतोनलोहोइ॥अ
साधुकीसंगतिकीज्यैतोहाथीकी
सींगनिहोइ॥ तातैंहोकहउहौं॥
उपावकरिये॥तबइतीकह्योया
कोंतुमचाकरराखो॥ वाकेकहेचा
रुदंतनामबनियाकोपुत्र॥राजपु
त्रहिचाकरराख्यो॥सबकार्यमेंव
कीप्रतीतिकीनी॥होतहोतएकदि
नभानुकरिचंदनलगाइ॥ बस्त्र
अतंकारपहरि॥बनियासोयहक
हीं॥जुहौंआजुत्तेएकमासगोरि

PANCH TANTRA

कोचाल्यो॥ पाछैं तीनकुं मित्र चल्ये जा
तजातबनमें एकै व्याघ्रमंथर एक रथो
एक रिथनुष ते बाधि घर ले चल्यो॥ आ
गेमूसा। काग। मृग। ए तीन्यो न बकुत
डुष पायो॥ हिरन्यक विलाप करन
लागो॥ अजकुं मैं ए कडुष को पारनो
ही पायो॥ यामो को इ सरो डुष आइ यडु
चो॥ ओ दसा होइ तब डुषन परिडुष
आइ यरे॥ स्वभाव ही तें जो मित्र होइ
सो पुनि तें पाईये॥ तातें वह सहज ने
ही मित्रता॥ बडी आपदा तें नछूटै॥
जातमाता सोनस्त्री सों। नमाई स्यों ओ
सो विस्वासन होइ॥ जैसो सहजसने
ही मित्र सो होइ॥ अहो मेरे अनागत
अपने कीये कर्म को फलु ई जनमया
ये॥ अथवा यादेही कों अबही नासहो
ग॥ तो भलो है॥ और सोक ते॥ नयते॥
सडुते॥ इन तें मित्र राखें॥ प्रीति है सुत्र

प्रीतिको पात्र है। श्लोक॥ आपदारति
कंरष्यं॥ प्रीतिविश्रंननाजनं॥ केनरत्नं
मिदंश्रेष्ठं मित्रनित्यज्वरदुयं॥ टी०॥ये
सोयहवेअक्षरकोरत्नमय किनभ्र
ज्याहे॥ औरमेत्रीजुहै॥ सुआषिनकेमु
षकोरसायनहै॥ चित्तकोआनंदकरै
सबसुषकोपात्र॥ असीमेत्रीसज्जनि
त्रसोकुलनमांहीं॥ औरमित्रसंपदा
में लोभतैं॥ द्रव्यकीवाछातैं॥ नयतें॥ द्र
हमांतिवक्रतैं॥ मिलापकरै॥ चित्रांग
सोंकही॥ अरुलघुपतनकसोंहीरन्प
ककही॥ मित्रसुनो जोलोंयहव्याधाद
नमेतैं निकसे॥ तोलोंयाकेछूटबेको
नयायहोइसुबेगिकरऊ॥ तबमूसा
कही चित्रांगतूयांनीकेतीरमृत्यक
सोपरिहि॥ कागतूमचित्रांगकी
पीठपरिबेविषादतरहो॥ तबवहनि
षादमथरकोछाडिमृगकोजैहैतब

मंथरके बंधन काटि दीो।। तब यह बचन
सुनि मृग अरु काग दोन्यूं पानी कैं त
रजाय आसीयें करी।। व्याध पानी पीक
रि रुधत्तरि बिश्रामकरि बैठो।। तब पा
नी कैं ती रमृग पस्यो देख्यो।। तब काती
ले मृग कों चल्यो।। इह बीचि हिरन्यक
मंथर के बंधन काटे।। तब मथर जा इज
लमैं पैठो।। मृग व्याध कों दिष्टि न्यो
व्याध फिरि आइ रुधत्तरि देख तो कछु
नहीं।। कछु हा कै बिन देखे बिचार न लागै।
कहउ हे या मोकों ऐसी ही बूझिये। जा
ते मैं बिनु बिचारें काम्र कीयो। जातें यह क
ही ही नीति बिषंजु हाथ कों छाडि। अनया
यकों जतन करै। ता कों हाथ कछु कों जाय
तब आपने अंगनि मैं पैठ्यो व्याध निरास ह्वो
इंकटग मैं गयो। बैचार्यो मित्र आपदा ते
छूटि। आपनी ठौर गये। यह कथा सुनि सं
तोषपाइ। राजा पुत्रन कहि चिंस चसुधी
नयो। तातैं हमारो मनोरथ सिध नयो। तब

बिघ्नसमी कहो॥ यह तुम्हारो मनोरथ सि
धनयो॥ ओर यह होऊ॥ सज्जनजनको
मित्रलाभ होउ॥ देसमैं लछमी अधि
क होउ॥ राजा प्रजानैं धर्मकरि स्थित
होउ॥ पृथवीको प्रतिपालकरऊ॥ मा
रू जनके मन के संतोषकूं सबहीसों
प्रीतिकरो॥ जैसैं तुम्हारे मन संतोषकों
नवजोबनश्री होऊ॥ श्रीमहादेवजी
सकललोक कौकल्याणकरऊ॥ ॥
इतिश्रीहितोपदेसमित्रलाभ कथा
निचयप्रथम विरचनं॥१॥ इतिमि
त्रलाभ॥१॥ अथसुहृद्भेद निरू
पते॥ आगैराजपुत्रनकही॥ अहो
गुरमित्रलाभतौ हमसुन्यो॥ अब ह
मकौसुहृद्भेद सुनिबेकी ईछाहै
तबबिष्णुसर्मीकहतुहै॥ एकसमैं
सिंघसों॥ अरुबरदस्यौबनमैंबभ्रो
स्नेह॥ सुतौ नीसारनि॥ उनकौस्नेह
परिछेद हरिकरवायो॥ तबराजपु

चन्द्र कही यह कैसी कथा है॥ नि
सुसर्मा कहत है सुनो दक्षण देस मैं॥
सुमंत तिलक नागर है॥ तहां एक
बर्धमान बनिया कपुत्र बसै॥ जद्यपि
बाकृत धनु है॥ तौ ऊ और बनियां कै
बकृत धन देषि॥ चाकौ ह्वा न ई॥
जु और धन उपराजै॥ जा तैं आय तैं
घटि देषि॥ कौन कौं न गर्ब होइ॥ अ
धिक देषि आपु कौ कौन न दरिद्री
जानै॥ और जा कै बकृत धन है सो ह
त्यारो ऊपूजिये और निर्धन कौ चंड
मा को चरा बरि बसचो होइ॥ तो वा
कौं जन पूछै॥ और जा कै नेछा ह न हो
इ॥ जैसे पुरस कौं लछमी न मिलै॥ त्यैसे
तरुणी कौं ह्वै न रुचै॥ और ब्याल
सी होइ॥ रोगी होइ॥ जन मन्दमि न छा
डिस कै॥ थोरे पाये संतोष करै॥ सदा
नय करै॥ एछ पकार बनाई कौन सा

वे॥ जाते थोरी ही संपदा तें सुख अधिक
[illegible]मानै॥ ता कौ चिंता अ
धिक न देखि॥ और जा कैं न
याय नांही॥ आनंद नांही॥ अरु या
राक्रम नाही॥ सत्रु कौं सुख दे अरु से
पुत्र मति का ऊके होइ॥ ताते यह
कही है जु॥ न पायो होइ ता कौं ज
तन करिये॥ जु पायो होइ सु बढा
इजे॥ वाहे धन पात्र कौं दान कीजे
जो अन पायो न चाहिये॥ पायो जो न
राखिये॥ तो वह आप ही जाइ॥ बाधे ध
न जो पात्र कौं दीजे॥ तो वा को काजै
कहा व्यर्थ है॥ नीति विषय यह कही
है॥ तिह द्रव्य कौ कौन काजी॥ जेन
दीजै न खाजे॥ तिह बल कौं कौन का
जै॥ जिह पै धर्म न करै॥ तिह मरी
रत कौन काय॥ जाते जितेंद्रिय न हो
इ॥ और जैसें थोरे ही थोरे अंजन॥ ४१

कारजको नासदेखिये तिसहीया सरी
रको दिन२ नासहोइतहै॥ तातै एकी
दिनदान॥ सत्कर्म। बिद्याअभ्यास॥
इनकरि सून्यैकरिये॥ जातै एकही
एकजलबूंदपरैघटुनरिये॥ तिसीहीग।
ति बिद्याकीअरुधनकी है॥ औरजाको
दिन बिनादानभोगजाइ॥ सोपुरुषजो
वतहीस्वासलेतमृतकुजानिये॥ जिसे
लुहारकीधउनि॥ यहबिचारकरिबहनि
कपुत्र॥ संजीवकनदनामनरदगाडी
मेंजोतिकै॥ बक्रतसमदावचढाइ॥ बनि
जकोंकासमीरउत्तरखंडकोंचल्यो॥ श्लो
क॥ कोतिभारसमर्थानं॥ कस्त्रैव्यव
सायनां॥ कोबिदेससुबिद्यानां॥ कःप्रि
यबादिनां॥ दो०॥ जातैसमर्थहैति
नकोंकोंनलार॥ साहसीकोंनकोंनदेस
इरि॥ पंडितकोंनकोंनबिदेस॥ जो प्रि

सबचनकहैं॥ताकेकोंनसत्रु॥तबयेडैमे
जातसुडुर्गमनामपर्वतपर॥संजीवक
कोपावदूटो॥पावदूटैतेंगिरयो॥वाकों
दधिबर्धमानबिचारयो॥जोनीतिसुन
द्यमकरै॥फलसोईजोबिधाताकेमन
मेंरहै॥तातेंडुषनकीज्ये॥तातेंडुषकीयें
काजिसिधिनहोइ॥तातेंडुषछाडिआ
गिलोकार्यहोइशुबिचारिये॥यहबि
चारुकरि॥वाचेतहिछाडिआगेंच
ल्योसंजीवबरदबडेकष्टकरिनठ्यो
कही॥श्लोक॥निमग्नस्यश्योदग्धो
परबतात्तितस्यच॥तथ्यकेनापिदष्टस्य
आयुर्मोणपरथ्यति॥टी०॥समुद्रमेंप
रयाहोइ॥पर्वततेंगिरयोहोइ॥सापको
टोहोइ॥तौनीआयुदीहोयतौजीवै॥
आगेसंजीवकबनमेंत्रिराषाइ॥पांणी
पीकरि॥खुसिहोइआनंदतेंगर्ज्योहो ४२

तिस वनमें पिंगलक नाम सिंघराज करै
जहि पिअषे षुनों हो। राज कों संसकारना
हो। तब रूअपनेय राक मनें सिंघमृगरा
जक हावै। सो सिंघु एक समै पांनी पीवेकूं
जमना के कछिन गयो। तहां सिंघुजैसो
रू बहूत सुन्यौ तैसो सबद सुन्यो। पुनि क
रि बिनि पानी पियेअरु सो आयनी ठौर ग
यो। जाय मनमें यह विचारी। यह हैकु ह
त बमंत्रीके पुत्र करटक अरु दमन
क। ये दोऊ स्यारा। राजा कों देखि विचारत
भये। तब करटक दमनक कही। मि
त्र काहे तें यह बिनु पांनी पिये आय सुचि
त होय बैठो है। मि रे बिचार्या कीसे वात
क रिये। या कों बात बूझनसों कों का ज्यों।
जातें इनहमारो अवगा कोरो। तातें हम
धिकु षपोय। और देखि जैसे वा करि बहु
चा हत तैसें। कैसें हैतिन आपने बस्य क
सीरसों पराये बसि कीयो। और पराये

आधीन करि जाडा वायु घाम कोमल
सुन्यो यि कहूं अंस आपड षत्तपस्या करि
सदा तो कोन सुषनपावे और हूं तनेहै
मैं कुलजनम जानिये जो पराये आधीन
न कूजिये जे पराये आधीन है जीवतते
ते मूये कोन जानिये से वकहै और जिन
सुगा ऊरहि नांति बिलतहै आउ जा
हि उहि बेचि बोलु मति बोलदि हहि
नांति आमा करे तो तें मूर्ष धनपाइ बऊ
पढि पढि गुणि गुणि पराये आधीन हो
तहै जे सोवस्पा को अलंकार और को का
यें को होत और स्वभावही तें चलु दुरीबा
नउयहि मन राषे अे सगा ऊर की सेवा
ऊपरि को न दिष्टि राषे सदा को बऊत
मांने कादेतें जा को ऊंचो होन को मतहै
जीवे को मतहै सुष को ऊमसहतहै ता
तें सेवक सो और को न मूर्षहै तब दम
नक कहतहै मित्र यह बात मन में धरि

ये॥ जातैं जतन करि बड़ो वा कुरकी से॰
वा कौं न करिये॥ जो वे गिही ग्रसन
के कैं से वक की कामना पूरण करै॥
आरंभि से वा न करै॥ ताको चमर
। छत्र। घोरे॥ हाथी। इनकी संपति क
हातैं होइ॥ तब करैक कहो॥ तब ही
हम कौं या बिचार सो कहा॥ तातैं जो
जिहकौं काम न होइ॥ सुजे करै तौ जै
सें कीलके उपारत बांदर मुयो॥ तैसें
वा की गति होइ॥ दमनक कहीयह
कैसी कथा है॥ मगध देस मैं धर्मारन्य॰
बन कौं नि रि॥ सुनदंत नामकायथ की
डा स्थल को आरंभ रच्यो॥ तहां ये काठ
चीरि कैं जब्यो रो सो रह्यो॥ तब बीच
यैक की नसो दे राख्यो॥ तहां एक बन
कौ बादर खेलत आयो॥ सु काल क रि
ग्रस्यो॥ वह की लाय करि बैसि हला
वन लागयो॥ तहां हला वतैं बादर के॰

दान्योयो ताका ठकैबीचपरै॥ आगेंउन
जतनकरिकीलाउपास्यो॥ तबवाकेदो
न्योपोताचायेगये॥ तातैंबादरमूवो॥ मू
हौंकहतहौं॥ बिनकार्जहीचेष्टानकरि
ये॥ तबदमनककही तोठाकुरकीचेष्टा
सेवकको जानीचाहिये॥ करटककही
प्रधानमंत्री सबकार्जकरै॥ सुयहबि
चारै॥ जातैंजुसेवकऔरकोअधिका
रनकरै॥ यहिजोठाकुरकेकार्जको
परायोअधिकारकरैसुखपावै॥ जैसें
स्वानकेकार्जकोपुकारतगदहामार्यो
दमनकही यहकैसीकथाहै॥ करट
ककहतहै॥ पूर्वदेसमेंकासोनाम
गरीहै॥ तहांएकसुकलहंसनाम
धोबीरहै॥ सुवहयेकदिनबहतरुणी
स्त्रीसोंरमनकीडाकरतसोईगयो
वाकोंचोरपरयो॥ आगनमेंगदहा
बाधोरहै॥ कूकरबैठोरहै॥ चोरको

दधि गदहो कूकर सों कह्यो॥ अहो इ
ह अवसर तेरो काजु है॥ तू सूकर
रि ठाकुर कों जगावत का है नांहि॥ त
ब कूकर कह्यो॥ मेरो कार्य तू ही क
रि॥ तू जानत है जे सेवा को घर ऊरध
तहों॥ यह अब बकत धनी नया॥ मो
कों चाहत नांहि॥ खाबे को नाही देत॥ त
ऐसे सेवक को आदर ठाकुर न करै जो
तो ठाकुर मे आय दान आवै॥ तब ग
दहा कह्यो सुनि रे बावरे कूकर॥ जब
ठाकुर कों काम परै तब भागे सुकरा
सेवक कह्यो सुनि रे गदहा जु काम ही य
ऐसे सेवक को चाहिये सुकरा ठाकुर हो शु
नु सेवक नि को न रणपो षण॥ ठाकुर
की सेवा॥ धर्म को करिबो॥ संतति को
नपरा जिबो॥ ऐवातें और सो न करव
रजें॥ तब गदहा कह्यो तू पापी है स्वा
मी को कार्य नाही करत॥ जैसे स्वामी

जागैतैसैऊकरिहौं। जातैंअर्थकोंयी
थिपाछैंकरियामतीजियो। आगैंश्रि
आगितापिजै। स्वामीसबहीनावसे
रजै। परलोकनिःकपटकैसाथियै
यहकहिगदहायुकास्यो। तबक्षो
बीयहसद्शुनिकैंकाचीनीदजाग्यो
गदहालावीमास्यो। तातैहौंकहू
तहौंआरकैकामकौंअधिकारआपु
नकीजियो। तातैंमित्रहमारैकार्यस्या
वजकोजिबोसुकरियै। आजुस्या
वजकोजिबेकौकामुनाहीं। हमआ
जुघायेपाछैंमासबऊतबस्योहोक
रटककहीतौतूआहारहीकौसेवा
करऊहै। यहतौभलीनाहीं। जातैंमि
त्रउपकारकरिबेकौंसत्रुकोबुरोक
रकैंराजाकीसेवाकरियतसौमेट
सबकोऊनांहींभरऊ। औरराजाकेआ
श्रेबऊतलोकजीवै। सोईजीवत

जानियेा। नातुरुबगुलान्आपनोंपेटनाहीं
भरतु। और मुनिदोषिएकसेवकपांच
कोडीकरिपाइयतएकलाषटका
करिपाइयतएकलाषऊनपाइजे
जातेंमनुष्यसबहीबराबरिनाहीं। परंतुजो
और कोसेवकहोइसोकछूनाहीं। और
जोसेवकनहोइसोईपहलेंजीवतनुभेंग
नियें। श्लोक। वाजवारणलोहानां। काष्ठ
पाषाणवाससां। नारीपुरुषतोयानांअं
तरंबडअंतरं। टीण। जातिघोरा। हाथी।
लोहा। काठ। पाथरा। कपरा। पानी। स्त्री।
पुरुष। इनमेंबडअंतरं। देषिकरक
रयोरेलोकमासलपटानों। हाइयाइ
संतोषनमानें। अरेसेंघु आगेंगाहोम्य
रखाडेरहाथीकोजाइमारे। तातेंबडे
ऊकषमेंआयनेंबलअनुसारकार्य
करैऔरदेषुवाकुरसेवककोअंतरु
करपूछइ

मुषपसारेपेट दिषावै॥तबटुकरापावै
हाथीथानहीबांधेंजबबेरबऊत।
जाइरलाईजे। तबनोगुषाइ॥ और
ग्यानसहित॥पराक्रमसहित। जससम
हित। अहंकारसहित॥ एकोघडीजी
वै॥सोईजीवतजांनिये॥ नातरुकाग
नांहीबऊतदिनजीवत॥ जातैंजोअ
पनोहितअहितनजांनैंअैसेपुरुष
अरुपसुकहाअंतरु है। जिसो सापतै
सोपुरुष॥ तबकरकंकहीहमतुम।
राज्यप्रधाननांही॥ हमहिअरुअैसे
बिचारसोकार्ज्यकहा॥ दमनकपुनि
कहतहै॥जातैंमंत्रीसमैंपाई आपनी
करणीतेबडोहोय॥छोटेऊंहोइकी
उजन्महीतेअभावहीतनलोबुरोहो
इ॥जैसैंपर्बतपरपाथरबडोजत्तनक
हाइजे॥ गिराइजेतैंमुषहीगिरै। जैसै
प्राणीबऊतैंगुणकरिबडोहोइयो

रहीदोषकरिनष्टजाई॥तातैंबडाई
कौजतननकीजे॥तबकरटकक
हीतूकहतहैकहा॥तबपुनिकही
याहमारोआकरसिंघु॥काहैतैंड
रपिकैंबचोहै॥तबकरटककही
तूजानतहैकाहैतैंडरप्योहै॥दमन
कनककहोयाकोकहाजान्योहै॥
॥श्लोक॥उद्यक्तिताप्यैःपिशुनाप्रिबु
ध्यतेःहयाश्चनागाश्चबृहन्तिनोदिता॥
अनुक्तमप्यूहतिपंडितोजनःपरेंगितज्ञा
नफलाहिबुध्यः॥टीका॥जातैंपंडित
विनाकहेजानैंपशुपक्षीवृक्षतेंजा
तैंघोराहाथीजिनकेलाखजेतिनचालै
मरीपोजोंदेषतेहीजाणै॥तातैंयाकी
बुधिबलकरिअैसेडरमेंबस्यकरिहै॥
जातैंप्रस्तावकेबचनकहै॥नेहकैजोग्य
हितुकरै॥आपनोबलजानिरिसकरै॥अै
सेदोयसोपंडितकहिये॥मित्रभे

नहीजानेंहि॥जातेंजो बिनुबुलायेजाइ
बिनपूछेंबकतबातेंकहै॥आपुकोंरा
जाकीमयाजानें॥सुकुबधीजांणिजे॥
दमनकंकहीमित्र। होसेवकेंकाहेनजा
नउ॥देषिजातेसबबस्तभली है। अरुबु
रीयोहै॥जुजाकोंभावैसोईताकोंनीकी
नभावैसोईबुरी॥जातेंजाकीजैसीप्रक
त्यहोइ॥ताकोंतिहीभातिबसिकीज्ये॥
औरजबठाकुरपूछै॥इदाकोंनहै।तब
कहैराजामैंहौं॥कहाआग्याहोतहै॥
तबराजाआग्यादेइसोकरै॥औरजाकों
प्यारीत्रिष्णाहोइ॥धीर्ज्यहोइ॥सयांनो
होय॥सोजैसैंपरछाहीनछाडै॥तैसैंसे
वानछाडै॥आग्यायाइउजरनकरै॥
सुराजाकेनिकटरहै॥करदमकहै
अबजोतूराजायासिजाहितौ॥अनौ
सरजानिअवग्याकरिहै॥तबउनिक
हीहैतौप्रेसीये॥तबऊठाकुरकीनि

कटसेवानछाडै॥जातैंलोककेडरतै
उद्यमछाडै॥सोकपूतजानियै॥अ
जीणीकेडरतैंभोजनकोनछाडतहै
॥अरुदेखिबिद्याकरिहीनहोइ॥अ
कुलीनहोइ॥मतीनहोइ॥अैसेकुजि
राजाकीनिकटसदारहै॥तौराजाम
यांकरै॥जातैंराजा॥श्री॥लता॥इनकी
जोनिकटरहैताहीसोंमिलहि॥त
रटकहीतूकैसेंजानैं॥उनिकहीं॥जो
वाकुरहरिहीतैंसेवककौंआवतो
देखिहसै॥आदरतैंबातपूछै॥पी
छैंसराहै॥अपनेमनेसेवकु
मंगनैं॥बिनकुसेवामयाकरै॥दो
षकुकोंगुनकरैमानैं॥तबठाकुर
कीमयाजानियै॥औरजबदेवैकै
आजुकालिकहिकहिकालगावै
अरुआसाबंधावै॥देइनाहीं॥जबजां
नियेजकुमयाहै॥

णा करि मानैं। यहमया कौलच्छ्रण है
जब गुनकूं कौदोष करि मानैं तदि कु
मया॥ तब गुनकौ गुन करि मानैं। दो
षकौ दोष करि मांनै॥ तब बराबरि।
जांनिये। यहजांनि ऐसेही मेरो नलो
मानिहै॥ तैसीयै करिहै॥ और जो मया
नो मंत्री होई सु राजा कौं नीति तेनय
जे जो व्यपत्ति सु आगैही प्रगट कहि
जनावै॥ और नीति तेहोई जो संपदा
तेउ आगैं जनावै॥ तब करटक क
ही॥ तब कूं समय बिनु नकहिहौ।
जातैं समय बिनु कहस्य तिकहै तौ
अपमानु पावै॥ दमनक कही मि
त्र मतिडरयहि॥ हैं बिनु समैं नक।
हिहौं॥ जातैं आयद कालमेराजा।
अमार्ग चलै॥ और जो कारज नकरै
नकहिये सो करै तौ मंत्री बिनपूछें क
राजाकूं सोकहै॥ अरु जो ऐसे समेकू

मंत्री न हि है तो मंत्री काहे को ॥ जा तें जि
ह गुन ते षा बे को पा ह जो ॥ अ हि है तो मं
त्री काहे को ॥ जा तें जि ह के गुन ते षा बे कों
पा ह ज्यो ॥ अ रु बहा है जो ॥ तो मित्र मो कों आ
ग्या दे हि ॥ कर ट कही जा ऊ ॥ दमनक य
ह बिचार कर चल्यो ॥ जा ह राजा पिंगल
क के नि कट ॥ कछु डरतें ह रि ता हो न यो
त ब सिंघ दे ख्यो ॥ दा हि ह रही ते आ ह सों बु
लायो ॥ त ब राजा सों डंडवत करि बे ठो ॥
त ब राजा कही बहु तें दिन दे षे हो ॥ त ब द
मनक ही राजा के ह मारो कछु कार्य ना
ही ॥ त ब ऊ समय पाय सेवक आयो चा
हो य ह जानि हो आयो ॥ जा तें का नुषु
जा ह बे कों दांत षो दिबे कों त्रिण ऊ सों
कार्य हो त है ॥ जा को हाथ या व बुधि है
अ रु सेवक ए क दिन का जि आवै ॥ जदि
पि तुम बहु त दिन मंत्र न पू छो ॥ त ब ह मा
री बुधि ना ही घटी ॥ जा तें

मंवाधिये॥काचमाथेधरिये।तबवेच
तेकाचशुकाच॥मणिशुमणि॥और
अपमानकरनयेजाकोधीजरहै॥ताकी
बुधिनघटै॥जातेअग्निजोगाडामेंघा
लिजे॥ज्वालाहरीहीजाई॥तातेरा
जासर्वथाविवेककरै॥जोराजाबि
सेषकरिसेवकोंकीसेवानजानैं।तो
सेवकोंसेवाकरिकोउछाहनब
धै॥औरतीनिप्रकारकेमनुष्यहैं॥
एकउत्तम॥एकमध्यम॥एकअधम
सो सेवकहोइ॥ताकोतैसोही काम
सोंपिये॥तातेसेवक॥अरुअलंका
र॥जहांजुडिये॥तहांराखिये॥जातेमा
थेकीमणिपावैवाधैतौनसोहै॥और
जोरत्नसोनैमेंजुडियेसोरांगमेंसोना
नपावै॥जदपिपावनवाधेमणितौन
वोलै॥यैवाधणहारेकोंलोकतौबावै
रोकहै॥जोराजासेवककी॥बुधिन

क्रियाराक्रमनीकेजांनै॥तिहराजाकै
बकृतसेवकहोइ॥जातैंघोरै॥हथ्थ
रा॥बीना॥बानी॥पुरुषश्री॥एजोनले
केहाथहोंहितौनीकेलागहि॥नातरु
उपहासकौंहै॥ओरसेवकमकृहो
इ॥समर्थनहोइतौकौंनकार्यकौंओ
रसमर्थहोइ॥अरुकृपाइकरैतौव
हकौनकाजिकौ॥राजामैतौरोनकृहो
अरुसमर्थहो॥जातैंराजाकी कुमया
तैंमंत्रीकीबुधिहीनहोइ॥तबनलो
मन्युष्यराजाकैनरहै॥तबनलेमनु
ष्यकैछाडै नीतिनरहै॥नीतिकैग
यसुवलोकसुषीहोइ॥जिहकोरा
जा मया करै॥ताकौंसबमानहिजो
तिनीतिकीबात्तलषिकाकृकीसु
निये॥जहांशूर्यकौनुजियारोनांहि
तहादीयाकोकरितुहो॥तबराजा

कही। अहो दमनक तुम्हारो प्रभ्न
मंत्रीके पुत्र॥ का कछु इष्ट कैं कहैव
कृत दिन हमारो या सिनाही आणे
सुतुमको अैसे नहू कि ये॥ अवैजो
कछू कहो चाहो सो कहो॥ दमनक क
ही राजा हो कछू पूछो चाहत हो
राजा कही पूछो॥ राजा तुम प्पा सनि
के निकट जाइ बिनपानी पीये फिरि
आये॥ सचिंत होइ बैठो है सुकाहेतें
सिंघि कही। जदपि हमारे मनकी बा
त औरसे कहिबे नाइ कनांही। तब
कृतो सोंकरहि हों॥ सुनुया हमारे बनमें
कोऊ अपूर्व जंतु आयो है॥ तातेंय
हतो रहमछाडिहैं॥ तुमऊ वाको सब
द सुन्यो होइहै। जेसें वाकों सद्दहै ते
सो बाको बलु होइहै। वहसबद ह
मऊ सुन्यो है॥ वातें डरबू कि ये॥ तोऊ

सुमंत्रीनां हजु यहनेही चौर छिडावि
औरसंग्राम करनकहैं औरसब
कीपरछा करिये जातेंबुधिबल
सबकश्री इनकी परछा आयदा
समयपायजे तबसिंघकही मेरम
नमें बडी आसंकाहै तबदमनक
कही मनहीमें ऐसी नहोय जो
तुम राजसुषछाडिहो मुहमसों बातें
कहो तबसिंघप्रगटकरिकही
राजाजोलौं हौंजीवतहौं तोलौंतुमभै
मतिकरो मोकौंआज्ञादेऊ जैसेकर
टकआदिदैऔरसबबुलायजे तातें
आपदामेंसबगयेकछकरिबोकरि
नहैं तबराजादमनकूंरकटदोमें
बुलाये बिकतमनमानदीय्यो इनदो
नोंकहीतुमनिश्चितहोउ मोरभयो
कोनासंकरिहैं यहकहिदोन्योचले
पैदैमेजतकटक

मित्र यामय को नास हम पे होइहै कि
न होय है यह बात बिनु बिचारे
दीयजो पै प्रसाद कू लीया जातें का
रज बिन सवा रकाइ को कछू न ते
जे जाते राजा की क्रिया मेल
क्षीन होय राजा के यह राक्षस मेजय
बसे राजा के क्रोध मे काल बसे रा
जा मे सब देवता के तेज बसुहै
राजा बालक होइ तो हू मन षन जा
नि जो अवगा होत है सु बडे देवता
को क्रम न य को रूप लीये रहुहै
तब दमनक कटोमित्र चुप रहो
समय को कार्य दमजा नो यह सिंघ
बरद को सब दूर निडर पो है बर
द को दमरू षा तहै सिंघ बद्ध करा
के रिहै कर कट क हो ऐसी बात
हो तो तब हो वासो का हे न कही दम
नक कहो या बात तब दमक हत

तोहमकोंप्रसादकाहेकोंदेतो॥ज्योतेंसे
वकठाकुरकौनचिंतनकरै॥जोठाकु
रकौनचिंतकरै॥तोसेवककीदधिक
र्नकीसीगतिहोइ॥ करटकककहीयह
कैसीकथाहै॥ दमनककहीतहै॥ग्रब्यर्थ
तनयरिएकमहाविक्रमनामसिंघरहै
ज बैसोवै॥ तबएकमूसासिंघकोकेस
वालनिकेग्रग्रभागकटेदेषि॥मूसेके
विनपायेविचारतभयो॥यहहैंकैंनउपा
यकरौं॥ यहबातग्रन्यत्रकहीहैसज्ञु
नान्होसोइयराक्रमकरिनपाईयेवाकेमा
रनकोजोबाहीसारियोहोइसोराषियो॥
यहविचारकरिसिंघुगावकीनिकट्जा
ई॥एकुदधिकर्णनामविलारग्रादर
दकरिमासग्राहारदैकैंग्रापनीकंदरा
मेंग्रानिराष्यो॥तबवाकेडरतेमूसाचा
हरिननिकसे॥तबयेवहसिंघुसोयो
चै॥ नश्चिंतभयो॥जबमूसादै—

दशुनेतबविसेषकरिमषभोजनुदे॥
आगेमूसामूषकरिषीभयो॥एक
दिनमूषकेंव्यापेंबादरिनिकस्योच
रनलागेो॥तदिबिलारयकरिमूसा
विषायेा॥पाछेसिंधुमूसाकोसबदन
शुनेनिःचिंतभयेा॥तबविचारनलागो
अबयाबिचारकोकछूकाजिनाही
यहजानिबिलारकोकछूकाजिनाही
यहजानिबिलारकोंकछूषावेकोंन
दे॥तबबिलारमनलागो॥तातेहोंक
हतहोंठाऊरश्चिंतनकरिये॥आगे
दमकाकरटकदोरुसंजीवनाम
बेलकेनिकटगयेा॥जायकरियेक
रूषतरिकरटकगर्बसोबेठो॥द
मनककह्योरिदषभ॥यासेनाप
तिकरटकयाबनकीरक्षाकोरा
जापिंगलकपठयोहै॥जेतूरहो
चाहतोबेगिआऊ॥नाहीतरुया

बनछाडिदो॥इहिकछुर्जहा॥तबयह
सुनिबुधिकरिहीनसंजीवकनयेसह
तनरैंआइ॥करटकसौंजुहारकी
यो॥जातैयहकहीनीतिबिषैं॥ब
लतेबुधिकौंबलअधिकहै॥बिबु
धिहाथीकुबाधीयतहै॥महाबत
कैमारैबिकारुहै॥बिनुबुधिह
मारीयहदसाहोतहै॥तबसंजी
वककही॥संजौअनयानतौचलौ
तबकरटककही॥तूयहडरछाडि
दै॥जातैजोत्रिणकौंनतोरैजैरूष॥
गढोहोइ॥जाहिमारिगिरावै॥तातै
बडोबडेदीसौंपराक्रमकरै॥आ
गैवैदोऊस्मारसंजीवककौंढारैरा
षिराजापैंगये॥राजाकैंनिकटजा
इप्रणामकरिबैठो॥राजाबन
कौंआदरकरियहकहीदेष्योव
हु॥दमनककहीहाजीदेष्यै

पनि राजा न्यौते सौ इह बली दे रा
जा सावधान होइ बैठि ज्यो । त्यौरा
जा सबद ही ते न डरिये । सबद को
कारन बिचारिये । सबद को कार
न बिचारे एक कुटनी की बड़ाई न
ई । तब राजा जाय कही यह कैसी
कथा है । कर टक कह तहे से
ल ना मयबंत मे एक श्री मत ना
मन गर के निकट घंटा क नी नाम
एक राष्ष सर है । तब यह बात स
म मत लोक मे । कह त सुनि ये राक्ष
स रहत है । ऐक दिना घंटा लीये
फेरे मे चोर मारि खायो । तब ह घं
टा बादर न्यू पाई । बादर सब मि
लि घंटा बजावै हि । तब वा नगर
के लोक मा न स मारयो देषि । घंटा
को सब द सुनि यह बिचारी घंटा क
नि रिसाई के मनुष्य षा त है । यह

बातदेषिकुटनीसबदकौकारनबि
चार्यो॥ देषैतौबादरघंटाबजावत्त
हैं॥ यहबातकुटनीसत्यंकरिराजा
सोंकह्यो॥ राजाजीबकुतद्रव्यरचौ
तौघंटाकरनकौमार्यो॥ तबराजा
कुटनीकौबकुतद्रव्यदीयै॥ तबवा
कुटनीवादरनकौकछूषावेकीसा
मग्रीलेबनमेगई॥ बनमेंजायनहां
लीपिकरिचौकपूर्यो॥ वहसामग्री
लेवांदरनिकैंआगेधरी॥ तबबाद
रघंटाछोडिषानलगे॥ तबवहकुंट
नीघंटालेचलतरही॥ घंटालेसुंदर
मेंआयराजाकौदई॥ तहांसबलो
कवाकुटनीकीपूजाकरनलागेता
तैंकहतहौंसबदहीसौंनडरिये॥
पाछेराजाकीआगपापइसंजीवक
मिलायो॥ तबसंजीवकउनसौं
मिलिउहांहीरह्यो॥ आगैहोसब

कदिनस्तवधकर्ननामराजाकोभाई
आयो तबवाकोआदरकरिबेग
रिपिंगलकवाकेआदारकोपभुमा
रिबकोंचल्यो तबहृदबीचिसंजी
कवोल्यो राजाआजुमृगमास्यो
ताकोमांसकहा राजाकहीदमन
ककरटकजोंने संजीवकहीबि
चारियेकेनांही सिंघकहीनहोइहै
तबसंजीवपुनिकही राजावहमास
उनाहीषायो राजाकहीषायोको
है हमरेनित्यआहीरातिहै तबसं
जीवकहतहै राजाकोबिनजनाये
षातषरचतहैसोअनीतिकरतहै
राजाकहीऔरकहो संजीवकक
हीप्रेसीनहूकिये जातेठाकुरको
जनायेंबिनुसेवककछूकार्जनक
रै आपदाकोबीतेबिनपूछेऊकरै
चिंतानाही औरमंत्रीप्रेसेहोजे

जैसो कमंफल संग्रह बहुत करै। खरचै
थोरो। जो एको छिन कार्य बिना गमा
वै। तो मूषे कहिजे। जो एको घडी राजा
की व्यर्थ खोवै तो दरिद्री होवै। और मं
त्री सोई भलो जु एक एक दाम करि रा
जा कं भंडार बढावै। जातें राजा के भां
डतें अधिक भंडार है। अरु धन जुतें
भले मनुष्य राजा की सेवा करत है। ध
नहीन भये घर की स्त्री हासत है। औ
र की कहा कहिये। राजमें यह प्रधान
कोऊ ष है। खरच बहुत करै। रक्षा न
करै। अधर्म करि धन जु पर राजो। भंडार
हरि राषै। ए धन के नास के कारण है। जा
तें अपनें उपाव बिनु बिचारें जो अधिक
खरच करै। तो कुबेर जु सो धन होइ तो न
रहै। यह बात संजीवक की सुनि स्तब्धक
नक कही। सुनि भाई ए दोउ करटक
दमनक। बहुत दिनतें अधिकारी हैं।

वारसंधिबिग्रहके करनहारहै जुकाय
कोअधिकारीहोय मुद्रव्यकोअधिका
रीनकरिये जातेंब्राह्मणजोद्रव्यषा
इलोरहै मुबडेकष्टनहोइ छत्री
मागत्तहीहत्यारदिषावै सगोसबलै
रहै जातिकोनातें घरकोसेवकजो
अधिकारीकरियेतो अपराधकछकोउ
डरनमानैं स्वामीकीअवगपाकरिमूं
पनोबिचारकरै उपकारीजोअधिका
रीकीजैतोअपनोउपकारबिचारिसब
लैरहै जोलरिकाइतेकछोडिदियामि
त्रहोइ मुजोअधिकारीकीजियेतो व
हआपुहीकोराजाकरिमानैं अदबु
नकरै कहैकहाभयोजोराजाभयो
हमारोसंगषेल्योहै जातेसबबस्त्र
इछाकरै बुधिहीनहोइ सुषकोनाम
चाहै अरकीओरकरै ऐमंत्रीकेदो
हैं तातेंनीतिमैंयहकह्योहै जोलौं

मंत्री बकुतनपी डियेतौलौं अपनौं द्रव्य
नदेजिसेंदुष्टमुषकौषीतबिनुचायेन
निकसै।।जातैं बारंबार अधिकारीकौ
डंडदीजियै।तौद्रव्यदेइ जैसौस्नानकी
धोवती।।ऐकहीबारनिचोरैंसबजलछा
डै।जिसेंबारंबारगाढोअैठियै।तैसैंज
लदेइ।यहसबजांनिकरिजैसेंबूझियै
तैसैंकरै।।तबराजापिंगलककही।।
यहतौहैएदोऊमेरोकह्योनाहीमानत
तबस्तब्धकर्णकही।यतौनबूझियै।।
दुष्टिनीतिविषैंयहकहीहै।।अहंकारी
कौजसजाइ।।विषमकपटतैंमंत्रीजा
य।।क्रियाहीनकौऊलनजाइ।लोभी
कौधर्मुजाय।।कुविसनतैंधनजाइ।
नीचकदर्जेकौसुखजाइ।।अरुराजा
कौमंत्रीअसावधानहोइ।ताकौराज
जाइ।।श्लोक।।आज्ञाभंगोनरेंद्राणां
मानषंडनं।व्यर्थकृसज्याचनारीणां।

असस्त्र वधमुच्यते ॥ राजाकी आ
ज्ञाभंग ॥ ब्राह्मणको माणषंहण स्त्री
कौभ्यंनसेजा ॥ एतीन्यो बिनहथ्या
रिमारेबराबरिहैं ॥ औरजो पुत्रऊन
आग्यानमाने ॥ तो राजाताऊकोंद
डदेइ ॥ जेश्रेसी नकरैतो मनुष्यनमें
अरु राजामेंकहअंतर ॥ अरु चित्र
मेंलिषायतुहेराजा ॥ जोसो चित्रको
सजाजेसोबऊराजा ॥ औरचोरतअ
धिकारीतेसचुते ॥ अरु अनेलोनते
राजाप्रजाकीरष्याकरै जैसेंपिताबाल
कीरष्याकरै ॥ भाईहमारोबचनसर्ब
यामनमेंराषिये ॥ हमआजुषायोहै
यहधानकोषांनहारोसंजीवक ॥
अधिकारीकरिराषिये ॥ यहबातसु
घ्यनिसंजीकअधिकारीकीयो ॥
याबैपिंगलक ॥ अरुसंजीक ॥ दोऊ
सबबंधुछाडिकेतेकालबरषस

सुखसेंवदृतप्रीतिसोंरहे। आगेंजब
वहसंजीका। आसेसेवकनकोंपावे
कोनदे॥तबदमनक। करटकदोऊ
आपनमेंबिचारनलागे॥दमनकक
हीमित्रकरटकअबकहाकरिये॥
यहतोहमारेकीयो॥तातेंआपनेकी
यदोषतेंपछिताऊबोनबूझिये।यह
बातकहीहै। एकोमेंसुनीहै। येकश्च
नलेषाकेछुवेकरिहतामेंनकरि॥
सेन्यासीमनिलेबेकीइछाकरि।ऐती
निआपनेदोषकरिदुषीनये॥करट
ककहीयहकैसीकथाहै॥दमनक
कहतहैकंचनपुरीबिक्रमादित्यरा
जारहे।तिहिनगरमेराजाकीआग्याप्रा
इएकनाउमारिबेकीठौरलेचले॥
तहांकंदर्पकेउनामसंन्यासी॥औरए
कसाधसहितयहबातकही।यह
नाउमा

उकौ ब्रश्रपकरै। तबराजाकेसेवक
रूकही काहेतेमारिबेलाइकनाही
कंदर्पकेतकहतहै स्वरूपिषाकौंछु
इकरि। साधु इतौ। साध ऐतीन्योछषी
भये॥ तबराजाकेसेवकपूछतहैकै
सैंछषीभये॥ संन्यासीकहतहै सिंघ
लदीपकोराजाजी सुतरुहै॥ ताकोपुत्र
कंर्पकेतुमेहौं॥ ऐकसमैंक्रीडाके।
वागमैंगाडाथा॥ तहांपोहपकेव्या
पारीआयेबागमेंआइमुहरे॥ तिन
केमुषमैंयहबातसुनी॥ जुइहांसमु
द्रमैंअधिष्ठारीचौदसिऐककल्प
इषप्रगटहोतहै॥ वाकेहेउमरणि
कीरणिकरिप्रकासित सेजपरबै
ठी॥ सबआभरणपहरै॥ लछिमी
समानवीनाबजावत॥ ऐककंन्या
देषियतहै॥ तबयहबातमैंसुनी हैं
सुनिकरिविचारतरह्यो॥ जुकैसेऊ

देषीजाइ॥ तब वे व्यौपारी समुद्रकी
पारकै वोहिथचढि व्यापार कौंलेच
लै॥ तब हौंम नि वोहिथचढि उन्हू बनि
यानकी साथचल्यो॥ जातनु सहीगोर
गये॥ वहांजाइकरि मैऊंकंन्यादेषी
आधीदेह पांनी मैदेषी॥ आधीउपरि
वाकी सुंदरता देषिहै वोहिथ नयरघ्यो।
वाकौंलैनसमुद्र मैं पैठे॥ आगे सोंनै
कैनगर मैंजाइकरि॥ सोंनके महल मैं
सेजपरि बैठी देषी। उनिहौंदेष्यो॥ दे
करि इतीपठाई॥ इतीआइ तब मैंभ्र
वतहीपूछी यहकंन्या कौंनु है॥ तब
तीमोसौं यहकही॥ यहकंदर्पकेतु
नामविद्याधर॥ समस्तनिकोराजा॥ त
कीबेटी रतनमंजरी होयहब्रतातक
तबआपसमैं अंन्यो अन्यप्रीति अनेक
इकीये॥ ऐकसमैं वासौं क्रीडाकरतहै
तबऐकांतमैमोसौं यहकही॥ हो स्वामि

आपनी इंछातें यहा सबनो ग करो। औंपर
या चित्रमेंजु लिषी है स्वर्णलेषा नाम वि
द्याधरी। प्रयाहिक बछ्रमतिछुवो। सुरे
कदिन हो तहोर दिन सक्यो। कौतक ते
वाकौ स्तनमें छुयो। तबवह स्वर्णाकी चित्र
लेषा ऊपरसों लातकरि मार्यो। जासों मेंया
सोर व्रदेसमें आइ पर्यो। तबतेहो बिर
हके उषकरि संन्यासी भयो। सु फिरतफि
रतयानगरमें आयो। यहाकाल्हि कीरा
ति अहीरकौ घरसो व्रतमें भ्रेसी दषी है
यहतें साझ अहीर मित्रसों मिलि मद्यपी
वत। आपनी स्त्री कुटिनी सों बातें करह
तदेषी। तबवाही अहीरी कौनी कैमा
रिथा नसों वांधी। आपसो इरद्यो। तब
आधीरातिनागू निकटनी आइवा अ
हीकौं कहतहै। अहोसषी तेरे बिरह
करि वह महामहापुरष मूवो चाहत
है। जातेचंद्रमाके उदयते। अंधका

रूप्यती तनये तेकामदेवजोबनवंतपु
षनकोतासकितासकितोरनमारतुहै ता
तिरहयानसोंमोहिवाधितासकोम
नोमनाईआवै॥ तबवैकुटनीवांधी॥
अहीरीउहांगई॥छिनएकरहेअहीर
जागे॥जागिकरियहबातकही॥कियअ
वरजारपासकाहेनाहीजातजब
यहबातकहेनबली॥तबउनिकहीते
रंगछुनयेहै॥तूमेरेबुलायेंनाहीबोलति
यहकहिछुरीकरिवाकोनाककाट्यो
पीछेसोरहयो॥यीछेसोईरहा॥पीछे
आईअहीरी॥वासेकहीइतीकहा
मोर॥इतीकही॥मेरोमुहोजुकहत
हैदेषतनाहीं॥तबअहीरीआपकी
बाधिवहछोडिदीन्ही॥वहनाईनि का
टीनाकतेआपनेघरआई॥तबआत
हीनाईवासोंछुरदडीमागी॥तबवहि
एकबडोछुराआनिदीन्हो

इक रिछुरा घरमेडारि दीन्हों तबनाइ
नुकारिउठी इनबिनअबाधमेरीनाक
कटी नाकहाथलेचोतरेजायपुकारी
आगेवहिरअहीरकेपूछेयहकहेअ
रेपापीअसोकौनहै जोमोसीयतिनरता
कोकलंकलगावै इहिककहाकहों
मेरोब्रह्मारआदेादिकपालजानतहै
मेरोधर्मचंद्रमासूर्यबायुअग्निआकास
पृथीजलछिदयजमजानदिनरातिदो
नोंसंध्यायेसकलमनुष्यकेचिरत्रजान
तहै जातेजोहोंसत्यपतिव्रताहों तोमुरे
मुखजेसोहैतोसोहोजायहकहेअहीरी
दीवाजानिअहीरकोंमुखदिषायो
जेसोकुतोतेसोदिषिवाकेपायनपर्यो
अबयामाधमेरेसंगिहै ताकेसमाचारसु
नोंयहबारहबर्षइहनग्रमेबज्रतुंड
वलेआयो इहांआइरात्रिबेशांकेघरि
सुतोवहबेसांअपनेघरकेद्वारमे

कोउकोंवेतालकालकरिबनायराष्यो
वाकेमाथेपरएकबमोरतनराष्योवा
रतनकेलोभतेइहअसाधआधीरा
त्रीउठिकरिवारतनकोहाथपसार्यो
रतनलैनलाग्यो। तबरतनछुवतही
वेस्पाकलुछिटकाई॥छिटकावतही
वाकेदोऊहाथबांधगये॥तबअसाधु
पीडाकरिउठीभये॥पुकारिउठ्यो॥त
बयासोंकुटनीकह्यो॥पूतमनयपवि
तेतउपायआयेहोजोकछूउपरतन
सुसवदेऊगेतबहीछूटऊगे॥नातरुय
हसोहरामजादोहोनुमारिडारिहै
तबइहसवरतनउवदीनो॥अबय
हसर्वप्रथोइहमारेंसाथिलागेहै
यहसमस्तवातमुनिराजाकेसेवकु
निन्यावकीयो॥तातेहोंकहउहो॥
इनैआपनेदोषतेंकष्टपायो॥तिसें
याहमारोकीयोदोषुहै॥यहछुटन

करिये॥ तबकरटकघडीएकबिचा
रिकही॥ मित्रदिनचारिदेषु॥ जोके
सीहोतिहै॥ दमनककहीजैसेमैंइन
सोंप्रीतिकरवाइहै॥ तैसेंभुइहदभेद
करिकरवाइहै॥ जैसोंबकचतुरऊ
ठीयोंबातसाचीकरिदिषावे॥ जैसे
चितेरोसमस्तभूमिनीचीऊंचीचित्रमें
दिषावे॥ जातेजाकीबुधिकाजिकी
बरियोंनघटे॥ शुआयदाकोंतिरजे
सेंअहीरीदोइहजारषसमकेआगें
दषतहीराषे॥ करटककहीयहकै
सीकथाहै॥ दमनककहतहै॥ धार
कानगरीमेंएकअहीरहै॥ वाकीबऊ
ढिभचारिणी॥ शुगावकेकोटवारसों
रहै॥ श्लोक॥ नाग्निरुप्पतिकाष्टानां
नां॥ नापगानांमहोदधिः॥ नांतकःसर्वभू
तानां॥ नपुमांवामलोचनां॥ दो॥ जातें
अग्निकाठकरि॥ समुझनदीनकरिका

नमनुष्यनकरि॥श्रीपुरुषनकरिरे
चास्योइनकरिकबहुचिंतनहीं॥२
औरदानकरि॥मानकरि॥सुधमा
वकरि॥सेवाकरि॥हृष्यारकेत्रास
करि॥साश्रुकेउपदेसकरि॥इन
मेंकाऊंकरि॥श्रीकीरक्षा नहोइ।
वहएकदिनाऊटवारकेबेटासे
बिनचारकरतहीं॥तिहिसमेंऊ
टवारआयो॥तबऊटवारकोआ
योदेषि॥ऊटवारकोबेटाकोगीमे
रष्यो॥रषिकुटवारऊकोमिलो
मनायो॥इहीबीचिंअहीरीकोन
तीआयो॥वाकोदेषिकहीऊटवा
रतुमहाथनाचीलेऊ॥लेकरिरिसा
तइहांतेनिकसो॥उनिअैसीयेकरी
अपनेघरआयो॥तबअहीरस्त्रीसो

तजातहो॥सुकाहेतै॥त

तिहै॥ कोटवार कोंनकुंकारनश्रय
नेंबेटासोंरिसाने॥ तबवाकोंबेटा
मारिबेकेडरसोंहमारेआइपैवो
वाकेबिनुदेयेरिसातजातहै॥ यह
कहिवाकोंठीमेतेंनत्राकोकाढि
दियायो॥ तातेयहकेसीकहीहै॥
जुपुरषतेस्त्रीनकोंभोजनहुनो॥बु
धिचोगुणो॥ चलछगुणो॥कामत्रा
ठगुणो॥ जातेहोंकहतहों॥कार्य
कीवरियाजाकीबुधिफुरासोई
भलो॥ तबकरटककहतहौ
हेतोश्रीसीये॥ तबदुष्टनकीप्री
तिबऊदिननकीजिमीहै॥एकोंमें
छूटिहै॥दमनककही॥जोयायक
रिछिडाएहै॥जातेजोकाजनपाय
तिहोइ॥सोबलतेंनहोइ॥जातेए
कहिकागिसोंनेकश्वत्रकरिका
रोसायमार्यो॥ करटककहीय

हकैसी कथा है। दमनक कहतहै
कनेऐक रूषपरऐक कागअरू
कागिनी रहैं॥ वाही रूषपरऐक
कारोसायरहै॥सोवृहकागन्रूके
बालक षाई॥सबही षाये॥तब
कागीको पुनि गर्भ रह्यो॥तब
उनि कागसों कही॥स्वामी यहवो
रक्षा किये हहांकारे सायतैहमारे
बालक नउबरहैं॥श्लोक॥उष्टा
भार्जासतं मित्रं॥मृत्यश्चोत्तरदाय
क॥ससर्पेचगृहेवासो॥मृत्यरेवन
संसय॥टीका॥जातेउष्टश्री॥कय
टी मित्रा॥सेवकउत्तरदेइ॥जाघर
मेंसर्परहै॥ऐचास्यौंमृत्युके का
रणहैं॥अरेप्रियतूमति डरहि॥ब
कृतबारमैंयाकोअपराधसह्यो
है॥अबहौयाकोंमारिहौं॥तब
कागिकही॥यामहाबली यासों

बैरतुम्हकोसेकरिहो॥ कागकही
तूयाचिंतामतिकरहि॥ जातेजा
केबुधिहैताकेबलुहै॥ जाकों।
बुधिनाही॥ ताकेबलकाहेको।
जातेबुधिकेबलकरिमहाबली
सिंघु॥ सुसेमास्यो॥ तबकागी क
हीयहकैसीकथाहै॥ कागकह
तहै॥ मंदारपरबतउपरि॥ एकड
ईनामसिंघरहै॥ सुसबपशून्कों
मारतहै॥ तबसबपशू मिलिसिंघ
सोंवीनतीकरनलागे॥ मृगराज
सुनो॥ तुमसबपशूकाहेकोंमार
तहो॥ तुम्हारेअहारकौं एकएक
पशुनित्यआनिदेहिगे॥ सिंघक।
हीभलीबातऐसेयेहोऊ॥ तबये
कएपशुनित्यखाइरहे॥ तबये
कदिनछूटेसमाकीवारीआई
तबवैसमैबिचास्यो॥ हौंजीवत

हीडरकोत्रासहूरीकरेजेमरननाश्रिं
तहेइ॥तोसिंघसोंदीननाथोंसकाहे
को॥यहबिचारकरि॥हलवैहलवै
चल्योतबसिंघकेंजाइपहुंच्यो॥तबसि
घरिसाइकरिकेद्योकाहेतबइतोंत्र
वारेआयो॥ससोकहीयामेरोअपरा
धनाही॥मारगमेंमोकोंश्रोरयेकसिंघ
यकरिरह्यो॥मेवासोंश्रनेकसंपतक
रितुमकों॥कहनआयोहों॥सिंघयह
वातसुनिरिसाइकरिक्रोधसोंकह्यो
बगिचलिमोहिबताऊ॥वहकहाहै
तबससावाकोंलेगयो॥लेजाइगह
रेकूवाउपरिगाढोकियो॥ससोकहीदे
खियान्नीतरसिंघुहै॥यहकहिवाहीसिं
घुकीपरछाईदिषाइ॥तबसिंघुबिना
बिचारेही॥वाकोंमारिबकों वाकूवा
मेंपस्यो॥परतहीमूवो॥तातेंहौंकहत
होजाकेबुधिताहीकेबलु॥तबकागि

कही सुनो जुई हा उपाय ब्रह्म क्रिये सो
करो ॥ इहां निकट ही के सरोवर
मे ॥ राजा को पुत्र स्नान आहू नित्य
ही करत है ॥ सुवह सोने की साक
ली उतारि राषतु है ॥ सुतू लेकरि
या सर्प के षोडरे मे राषु ॥ वह जब
स्नान करन लागो ॥ तब सोने को
सूत्र उतारि सुई धर्यो ॥ इहबीचि
काग निवद्द साकली ति आई ॥ आ
नि सापके षोडरे मे धरि आई ॥ तब
राजा को पुत्र देषे तो साकली नाही
काग लेगयो ॥ तब राजा के पुत्र के
सेवक षोजन करन लागे ॥ षोजत
षोजत वा षोडरे मे साकली देषी
अरु सापदेष्यो ॥ तब साप को मा
रि साकली लिआये ॥ तातें हो क
ह्यु है ॥ उपावक रिहो ॥ इश्वर
क्रम तें नहोई ॥ तब कटक क

हो अेसी है तो जा कुं पेहेम उमकों कुमल
हो कुं तब हमन कुं चल्या। पिंगुलकुं के
निकट गयो। जाय जुहार कीयो। राजा
कों आय पा सिद्धो। बिनय बात कुं
हो। राजा जी पिंउ महमकों नादीचा
हे तो तब हो तें हमारो अपमान हो तें
तो हम कुं जिपा इ आये हो। जो तें राजा
कों जुदि आय दीहो। तब राजा अमा
गी चल्या। अरु जब कोये काजे कुं मेरल
तजो। तब सेवग राजा कों दिइ हो इ
सो बिनइ लेइ कुं। अरु राजा भोग कु
रिबे कुं। मंत्री कायकरिबे कुं जो राजा कों
कोये नशाइ तो मंत्री कों दोष आवे। जा
तें दे षि मंत्रीयन कोय इ ओदा रे हे।।
बरु प्रान जां हि। अथवा कोऊ अपनो
मूहकों टो। मंत्री सो ऊ से हो। जब कोऊ रा
जा को राज लो योचो हो। तब वह बात सु
नि करि मंत्री चुप कुरि न रे हो। राजा सुं

कहे। तब पिंगल कवासों आदरक
रि। बुलाइ पूछत हे। तुम कहा कह्यो
चाहत हो। दमक कहीयहसंजी
वक तुमसों न बूझिये। अमी कीयो
चाहतु है। सदा मेरे आगे तुम्हारी निं
दा करत हे। राजा को प्रताप न्हा
दमंत्र ना स करिहै। यह कहि राज
लीयो चाहत हे। आप ही राजा भयो
चाहतु है। यह सुनि राजा भय करि
सुनि चुप कैं रह्यो। दमनक पुनिक
ही। राजा तुम सब मंत्री बिडारिक
रि। यह ऐक सबज्ञ मंत्री कीये। यह
तुम भली न करी। जातैं मंत्री बकृत
बाढै। तब ल्हि मी दोई मैं ऐक कौं
छांडै। जातैं श्री कै कहे बकृतभा
रत सह्यो जाय। और जो राजा ऐक
ही मंत्री कौं प्रधान करै। तो वा मंत्री
कैं अग्पांन उपजै। आलसतैं राज्य कै

काजमैं विरक्त होइ। तातैं राज्यकी
इच्छा करै। राज्यकी इच्छा तैं राजा कौं
मारै। और विषप्रयोग मित्र्यो अनउर
तैं चल्यो दंत। दुष्ट मंत्री। ऐतबही दूरि
करिये हि। नराषीय हि। और जो ये क
ही मंत्री कौं आधीन होय। तौ वाकौं
राज्य बिगरै। राजा आयदा करि दुषी
होइ। जैसे आधरौ इसरे मनुषा बिना
न चलि सकै। और मंत्री जब बडा इ
जैतबबुरौ तैं कै तातैं प्रभुता तैं बिका
रई पजै। वह संजीवक अपनी इछा
तैं सब कार्ज करत हे। यह बात और
सी नहु फिये। आगैं राजा जी तुम्हरौ
बिचारु सोई प्रमाण। जो तैं अैसे पुर
षलोक मैं नाही। जो पराई स्त्री कौं
सकाम होइ न देषै। तातैं यह तेरौ
राज्य लयो चाहत हे। तब सिंघ बिचा
रि करि कही। हे तौ अैसी ये। तौ इस

जीवकपरमेरौबऊतस्नेहहै जातें
जोआपनोप्रियहै सुजोकपट करै
तौप्रियहीहै जैसौबऊतदोषकरि
सरीरप्रियहीहै औरजोबुरौऊकरैतौ
प्रियहोइ मुअप्रियकैदेनहोइ जैसैं
अग्निजोघरजारैतौऊअग्निबिना
न नसरै दमैकपुनिकहीराजायाही
तौदोषुहै जातेजाहीकौराजाबढा
वै बऊतमयाकरै ताहीकौलछि
मीआराधै बिटाहोउ मंत्रीहोउ कि
औरकोऊहोऊ सोईगाऊरजाकौं
राजाबढावै औरसुनुजुबातसुनत
नीकीलागै सुजुनीकीबातहितहो
इसोईकहै नीकीबातकौकहनहारौ
सुननहारैतहांहोइ तहांआगैंबऊ
तसंपदापावै राजातुमघरकेसेवक
काडि।यापरदेसीकौबऊतअधिका
रकीयो सोयहनबूझियै यैजातैंबि
द्याअरैसौबंधुनांही।व्याधिसौसत्रुनां

ही। पुत्रसों स्नेही नाही॥ भाग्यसों ब
लु नाही॥ राजा सुनौ घर के अपराधते
और कोनु परदेसी आनि निवाजिये
तौ॥ सर्वथा करिकारिजमें भेद नय
जैं॥ अरु सिंघु कहतहै॥ या बडौ आ
श्चर्य॥ जाकै मैं निवाजौ॥ सहभाति
मया करौ॥ मुमेरो बुरो कैसो करि
है॥ दमनक कहीराजा किनी सेवा
करियेतौ दुर्जन आपनी प्रकृत्पन
छांडै॥ जैसें कूकर की पूंछ। सोभा
तिनतनगाइजे॥ अरु सेकिजे। तो
ऊटढीपेहोइ। नीचकोअधिकार
करिबढाइजे॥ सनमानुदीजे। तौ
हनलीनताको। जैसें बिषकोरूष
अमृतकरिसीचियेतौ कभीहेत
ननलागै॥ तातैहौंकहतहौं जो
भलोचाहियेताको बिनपूछे

त कहिये तुकी बात श्रेसी येहै ॥ यह
साधुको धर्म है ॥ जातें नीति मेंयह बात
कही है ॥ जेही सो जो आपदातें निवारे
कर्म सोई जातें अपजस न होइ ॥ श्री सोई
जो आमें रहै ॥ बुधि वाही सो इ ॥ जाको
साधुजन आदर करिहि ॥ मंत्री सोई जो
गर्व न करै ॥ बुधि सोई जो विश्वास छा
डै ॥ मित्र सोई जो हित कारी होइ ॥ पुर
ष सोई जो जितें इंद्रिय होय ॥ तातें राजा
संजीवक ते उपजिहै सुष सो जे चेत
न होइ ॥ बिनासन कहो तो हमारो
दोष नाही ॥ जातें राजा का मन्त्री गमे
आस क्रक रिके अपनो कार्ज रहि
न जानै ॥ आपनी ही इछा मानो रहै
हाथी सो ॥ तब अहंकार करि जब
सुष पावै ॥ तब सेवक न्हू के माथे दो
षदै ॥ अपनी अनीति न जानै ॥ यह सु

निधिंगलकअपनैंमनमैंबिचारत
भयो॥ तोऊऔरकैकहै॥आपनै
बिनुबिचरेप्रसादतथादमनकी
जे॥ज्यौंतैंगुनदोषबिनुबिचारैं॥सं
स्तिप्रसादनकीजे॥जैसैंगबैतैस
पैकेमारिबेकूं॥सर्पकेमुषमैंहाथ
कौनमेलैतौवाहीकौनासहोइ॥
अबप्रगटकहतुहौं॥संजीवककौं
इहांबुलानूं॥दमनकही॥राजावा
कौंबुलाये॥मंत्रभेदकरिहै॥जातैंय
हशुपक्षमंत्रीनीकैबीजनीकराषि
ये॥जातैबीजजोथोरोभीफूटैतौ॰
कूरकौनकरै॥औरमंत्रसबहीअंग
रिगुप्तहोइ॥तोऊबऊतकालनरहि
सकैं॥जैसैंकातरजोधा॥सबअंगसं
जोगपैहरैं॥सत्रकेडरबऊतका
लसंग्रामैंरहिनसकैं॥आगैंजासेव
कोदोषदैषहोय॥तौवाकोवहदो

षबिनुछाडैबडाश्रजे सोयहनीतिनां
हीं यहनबूझिये जातैयेकबैराजि
हकोदोषदेखिये तासोंहसरैप्रीति
करियेतौमरणापाईये जैसैषच्चरि
गतैगयेंमरैं श्रौरजोनपरिकाम्यौ
रहै श्रंतहकरहुष्ट तामनुष्यतेस
बश्रनर्थकूपजै जैसैंसकटिनीराजा
उर्जीधनकौमंत्री श्ररुसकटारा
जानंदकौमंत्री तबराजायहकही
बिचारियहहमारोक हाकरिसकै
दमनककहीं याकेश्रंगप्रसंगबि
नजानैकैसैकरिजाय श्रंगतैछो
टोकबडौकार्जकरै जातैदेषुऐक
यपाहै समुद्रब्याकुलकीयो सिंघ
लछीयहकैसीकथाहै दमनक
कहतुहै समुद्रकीतीरऐकपपीहा
यपणीश्रीसहितरहै तहांवाकी
स्त्रीप्रसूतिसमये भर्तारसोंक

हो॥ स्वामी मो कौं अंडा राषिवे कौं ठौर नी
कौसी करौ॥ तब निकदीय ठौर नैसे
हो॥ तब अस्त्री कहीय ठौर समुद्र कौ लेइ
रिआवते हो॥ तब पीपी हा कदन लागा
इम कौं लइ रिआइ दे॥ इम कौं नेउपाइ
कछि उषदे हिगे॥ जब इसि अस्त्री कही॥
स्वामी उस मुद्र मौ कै मैवर करागे॥ जैमरे
सक्ति उष विनास करन कौ दे कि नांही
यह विचार करि कहा जे करे मुउषनपावै
तब मरता के बचन करि उ हांदी अंडा
राष समुद्र मा हि पपी हा की सक्ति दे
षि वे कौं॥ अंडा लइ रमे वोरे॥ तब वह अ
स्त्री शोक करि मरता सौं बोली॥ वेडौक
इन यो अंडा समुद्र लै गयो॥ तब पपी हा क
ही कि प्रिया इम तिउ रय हि॥ अंडा दौ लैआ
यहौं लैआइ दौं॥ मह कहि पंखी सब मि
लाइ करि गरुड़ सौं कही॥ गरुड़ श्रीना
रायण सौं कही॥ तब श्रीनारायण की

आगपायाई समुद्र आदीये पय
हासंतोषपायो तातैहौंकहतहौं
अंगयसंग बिनजाने पराईसक्ति
नजांनीजाय हमकैसेजानहिगे
जयाहमकौमारनआवतहै तब
दमनककही तबसीगकेअग्र
तुम्हारैसनमुषकरि पूछनआइ
हैतबहीजांनिहो दमनकराजा
स्पइतनीबातकहिकरिसंजीव
कवैनिकटिगयो उनिसंजीव
वकआदरसौं दमनकपूछ्यौ
मित्रकुसलहै दमनककही
परसेवककौकाहेकीकुसलै स
जातैसंपतिअरुयराधीनचित्त
कबहुथिरनाही अनेजीवकु
कीप्रतीतिनांही बिसेषजोराजा
कौसेवक कहतिनकौचित्त
कैसेथिररहैइ औरदुषपाइ

केकौनन गबिनयो॥संसारीअैसो
कौनहै॥जाकेआपदानभई॥को
नकोमनुश्रीन्हकिनाहीदयो॥
राजाकोनकोमित्रभयो॥कालके
बसकोननाहीपरयो॥कौनअैसो
जाचकहैजिहबडाईपाई॥उजैन
केफासमेपरकोनछूटोहै॥मित्रक
हौतो॥दमनकहुतहै॥मित्रहैलो
गपहीनहै॥ऊषजैसेसमुद्रमेंबूड
तसायअलंबनदेख्यो॥दिमिकरि
नपकरिसकोनछाडिसकै॥तिसे
होंनकहिसकौं॥नबिनकहेरह्या
जाय॥जातेंजोकहौतोराजासों॥ह
मारीप्रतितिजाइ॥जोनकहौतो
तेरोबुरोहोइ॥तातेकहाकरौं॥क
हाजानो॥हेऊषसमुद्रमेपरयो॥यह
कहिसासछाडिदेछो॥तबसंजीव
ककही॥जहिराजाकीबातनं

कहिये प्रियतौकुमनकीवा
तयगटकरिकहौ दमनक
नीरेंहोइकैंकानमेंकही जद
पिराजाकी बातनकहिये तौकु
तूमेरीप्रतीतितेंआयोहो मेरो
पासरहौहो तातेंहौंअपनोंपर
लोकराखिबेकुं तेरोहितजा
निकहिहौं सुनियहवाकरते
वैपरकुदृष्टिहै सुमोकौयह
एकांतमेंकही आजुसजीवक
कौमारि सबपरिवारविपति
करिहौं यहसुनिसंजीवकबकु
तउदासभयो डषपायोदमन
कापुनिकही डषमतिकरहि
जुकछुआगेंहूफियेसुविचार
करुं संजीवकएकचितबिचा
रिकही यहजिनकही तिनचली
कही जातेंश्रीनीचहीतेंसमें अरु

राजा कुपात्रही कौंपठावै॥ धनुक्रयन
ही कौंरहै॥ मंधपहारमेंउषरमेंबर्षु
तबरिषहै॥ मनमेंबिचारतभयो॥ य
ह दमनक आपही कहतहै॥ कि कौ
राजाकौ बिचारहै॥ यहबात जानीन
जाइ॥ जातेंउत्तम आशेपाइकरि॥ बुरे
ऊमलौदीसतुहै॥ जैसेंमलीनकाजर
श्रीनकेनेत्रमोनलोइलागै॥ अथ
वाराजाईकेहाकेहौं॥ औरसेवकसा
वधानकैसेवाकरैतौसेवातकुराजा
कैक्रोधनपैजै॥ यहआश्चर्यनांही॥
जातेदेवताकुकीयतिभा॥ सेवक
कौंचोरैअपराधक्रोधकरै॥ तातैर
यावातकोऊकारनपाइक्रोधकरै
ताकौक्रोधका कारनभयेजाय
औरपरिबिनकारनहीक्रोधकरैतौ
कौंमनुष्यकैसेप्रसनकरिसकैकोय
दमनमेंबिचारि॥ दमनकसोंप्र

टकही अहोराजाकोदमकहाअपरा
धुकीयो जातेराजा तुमसोअैसीकही
अथवाराजाबिनकारनऊंबुरोकरहि
दमनककहीयाहतैंभलीजानी सुनु
राजाकीसेवाअतिकठिनहै जोगिस्वर
ऊसैंननिर्वरहै जातेभलोचउरमित्र
ऊकोकीयोउपकारकबुरोकरिजा
नहि अरुअोरऊकोकीयोअपका
रहूकोकबऊभलोकरिजानैं तातै
राजाकोमनुकऊकरिबसिकीयो
नजाइ अोरअसाधकोसतउपकार
करियेतोव्यर्थ मूर्षकोंसोहितबचन
कहियेतोब्यथ जाकेबिचारनांहीता
कोंसोतिबुधिसिषाइजेतोव्यर्थ अो
रचंदनकेरूषमेंमाय जिहपाणीमो
कमल तहाग्राह गुनकोनाशकर
नहारमूषि तातैंजहाशुषतहांउषहै
दमनककही यहगकुरमनमेंसरस

कुटिलहै॥ यहमोजानी॥ जातैआवत
देषिहरहीतैहाथउचाइ॥ आषिआ
दकेआसूआनि॥ कछूवैविबेकूआ
सनचारिदइ॥ अरुगादोआतिगनु
प्रियबार्ता हितसोंपूछै॥ मनभीतरि
तिकपटी॥ बाहरिमीठो॥ यामैआ
चउ॥ यहअैसोदुर्जनकुआपर्बना
चकसातेसोघोहै॥ देजातैसमुझ
रबेकजिहाज॥ अंधकारकोदीप
गरमीकोबीजना॥ मातीहाथीआ
सा॥ इहमांतिशुवस्तुनाही॥ जाकोवि
धाताउपावनांहीकरिदीयो॥ औप
दुर्जनकेचित्तकीवृत्यबिधाताकुन
रिसक्यो॥ यहमेरैमनिआवतिहै त
बसंजीवकूकही॥ हौंधानकौधानद
रो॥ काहेतैंसिंघकेपस्यो॥ बड़ोदुष
यो॥ मासोकाहेतेराजारिसांनो॥ राजा
सोंसदाकरियेराजाको॥

मगहो इतो कोंन मिलाइसके जैसेंक
टिक कोकंकण फूटे तो कोन जो
रिसके त्रैवज्र कोतेजु अरु राजा
कोतेजु ए दोनु कठिन हैं परि वज्र को
तेज एक ही कोमारे इसरो राजा को
तेजु कुल ग्राम देस सबही कोंमारे
तातें संग्राम करियेसो भलो दीन
भाषिजे सभली नाही जातें शूरमा
कोदोइ वात भली हैं जो मरे तो स्व
र्ग भोगवे जीते तो सुषभोगवे अब
यहजुध को समयो है जो जुध न करि
ये तो मरण निश्चे है जुध करिये तो
संदेह है आपु बाको मारिये कव
इ आपको मारे तबदमनक कही
जबवह तो कोंपूछन गइ सुषपसा
रिदषे तबतो कमहोइ शुक
रियहि देषुजे ते
नहोइ तो

ग्नि को तिज जाय॥ तब राष को सबै छुवै
ऐवा तैं सब गुप्त करि दियहि॥ नात्र मनु
मन हम॥ यह करि दमनक॥ करटक
पास गयो॥ तिनि कही कहा करि आ
यो॥ दमनक कही डंक मारि करवा
यो॥ करटक कही॥ यामें संदेह कहा
जातें दुष्ट कै कोंन बंधु है॥ बक्र तमानें
कोंन रिसाइ॥ धन करि कोंन न सुषया
वै॥ मानते कोंन न पंडित होइ॥ और
धनी होइ असु धि बुधि होई॥ साऊ
असाधनि के संगते असाध होइ॥ दुष्ट
को संग कहा न करै॥ जैसो अग्नि त
हां रहै तहां ही जरावै॥ आगें दमन
कपिंगलक कें निकट जाय यह क
ही॥ अहो राजा आये हो वहयायी तु
म साव धान न होइ बे तो॥ यह करि जै
सें संजीवक सों कही ऊती॥ तिही भा
ति सिंघु बेगा स्यो॥ संजीवक आइ जु

हारकरि नहीं भांति सिंघदेष्यो देषिक
रिजथा स क्रिपराक्रम सिंघ सौंकीयो
तबदोन्यूंसंग्रामभयो संग्राम होत रहि
घहिमंजीवकमार्यो आगैंपिंगलसं
जीवकौंमारि कछुसोकक रिरहो
अहोहामैंकौंनदारुनकर्मकीयो जा
तैंसबैमिलिकरि राज्यभोगकरहि
पापुराजाकेमाथे जातैंधर्मकैंछाडैं
राजाहोइ जैसैंसिंघहांथीमारै मृग
राजकहावै श्रोनीभूमिगयें नीकौ
सेवकगयें बडीहानिहोइ तौऊभू
मिश्रोरहोइ यैभलोसेवकबऊरिन
पाईयें तबदमनककही राजायहक
हाकीनीतिहै जुसत्रुकौंमारियचि
तातहै यहबातनबूझियें जातैं
पिताहोइ पुत्रहोइ भाईहोऊमि
त्रहोउ जोराजाकौंमारिबो ताकै
तौराजानन्दकोसर्वथामारै श्रोराजो

धर्मात्मा होइ॥ सो न अतिदयानकरै
जो दया करै तौ हाथ ऊ को द्रव्य और को
ऊ छिना इ लेइ॥ और संन्यासी कौ स
बन्न छिमा है॥ गुण है। राजा जे अपरा
धी कौं छिमा करै तो दोष है॥ और राज्य
के लोभ तें॥ अहंकार तें जो स्वामी की
पदवी आपु कौं चाहै॥ जा कौं मरन अं
त॥ नरक पाप्ति होइ॥ और राजा जो दया
वंत होइ॥ ब्राह्मण सबै वस्तु पाई॥
अश्रीतंत होइ॥ सेवग सुखी होइ॥ मि
त्र सुख होइ॥ अधिकारी असाधु
न होई॥ जो की यो न उपकार न मानै॥
ए सबही इ रिछा डिये॥ और राजा बि
ष तें छाडि यहि॥ राजा नीति अैसी जैसी
बेस्या॥ कबहुं कठिन॥ कबहुं कोम
ल॥ कबहुं झूठ कहै॥ कबहुं सांच
कहै॥ कबै दयावंत
कबहुं लोभी॥ कबहुं

हीघरचिबऊतकरावै सर्वदाबऊतमि
त्र बऊतधनचाहै इहभातिअनेक
रूपराजाकरै तौहीसुषपावै इहभा
तिदमनकेसमझाये राजासोकछा
डिसिंघासनबैठो दमनकसंतोषपा
इकही राजाहुमारोजयहोउ अरु
सबलोकको कुसलहोऊ यहकहि
सुषसोंरहो तबबिष्णुसर्मा राजपु
त्रनसोंकही सुहृदभेदसुन्यो तुम
राजपुत्रनकही हाजी सुन्यो बऊ
तसुषभयो बिष्णुसर्माकही और
यहहोऊ तुम्हारेसत्रुनकोंघरसुहृ
दभेदहोऊ सत्रुदिनदीनहोऊ
साधनकोंसदासुषहोउ बालकहि
हिकथारूपी वागमेंसदाषेलऊ

आगैजो बिष्णुसर्मा और कथा

कौबिचारकीयो॥ तबराजपुत्रनकही
जोतुमहिनीकौलागैसोहिकहतुहौ बि
श्नुसर्माकह्योबिग्रहसुनौं हंसनसौंम्र
रूमोरनसौं जबबैरउपज्यौ॥ तबकाग
मयूरकीकैतिहोइ॥ हंसहराये॥ तबराज
पुत्रनकहीयहकैसीकथाहै॥ बिष्णुस
र्माकहतुहै॥ कर्पूरदीपमैं॥ यदमकेलि
नामसरोवरहै॥ तहांहिरंण्यगर्भनामरा
जाहंसरहै॥ शुसबजलकेपछीनमिलि
राजाकियो॥ जातैंजहांनीतिकोज्ञाता
राजानाहीहोई॥ तहांकीप्रजानठह
राइ॥ और राजाप्रजाकीरक्षाकरै प्र
जाराजाकोपठावै॥ बडाइबैतैराषि
बो अधिकहै॥ जातैंराषियेनांहीतौव
ढाइकहा॥ ऐकसमैवहराजासौंनेंके
कमतनपरिशुषीविलोरहै॥ परिवारि
सहित॥ सभासहित॥ तहांदोनेंक
दीपते॥ बगुलाआयो॥ दीर्घमुषनामह

नाम करिबैठो तबवाकों देषिराजाक
हा दीर्घमुषतुमहरितैं आयेहो तहाके
विसेषिसमाचारकहो तबबगुलाक
हतुहै राजाऐकबडीबातहै तुहैक
हआयोहै जंबूदीपमेंऐकबिंध्यिना
मपर्वतहै तहांबिचित्रबर्णनाममय
रपक्षीनकोराजाबसतुहै वाकेसेवक
मोकोंबनमेंचरतदेषि पूछनलागे
तूकोंनहहिकहातैंआयो तबमैंक
हीकर्पूरदीपकोराजाहंसचक्रवर्ती
हिरंण्यगर्भनामताकोहोसेवकहो
प्यालतेओरदेससांतरदेषिवेकूआ
योहौं तबउनिकहीकहोंधौं तुम्हा
रेअरुहमारेदसमेंकोंनदेसकोंनराजा
नलो तबमैंकहीरिकहाकहुहो
बकुतअंतरुहै कर्पूरदीपसाक्षात
स्वर्गलोकहै राजाहंसहुसरोयघहै
हहांवुरेदसमेंतुमकाकरतहो

चलोहमारेंहीदेस॥तबमेरोबचनसु
नि॥उनियंछीनक्रोधकीयो॥जातेंस
पकोंदुखपाईयेतोबिषहोइ॥तेसोम्
षिकोनलोउपदेसदीजैतोक्रोधहोइ॥
औरनलेहीकोंउपदेसदीजेबुरेकोन
दीजे॥जातेंआगपानीबादरुकोंउपदे
शदीयेंपछीनकीठोरछूटी॥राजाकहो
यहकैसीकथाहै॥बगुलाकहतहो॥
नदीकेतीरपर्वतकेहेठबडोएकसे
वरिकोरूषहै॥वासुषपरिषोंषसमेंपंछी
नरिषाकालमेंसुषसोरहैतहांएकस
मेंजैसीनीलकीरासिहोइ॥ऐसेअति
स्याम॥मिघनकीआकासतेबडीबषो
नई॥तबरूषतरिबादरबषीतेदुषी
आइबैठे॥जबबांदरनकोंदुषीदषि
दयोतेंपंछीनकहो॥अरेबादरुहम
अपनीचोंचनूकरिनिकेकचकरि
आपुकोंघरकीयोहै॥तुम्हारोतोहा
थपावहहि॥ऐसोकाहिमरतहो॥यह

सुनि क्रोधकरि बादरकुं बिचार्यो ऐसं
ही सुषी बोधमें पैठि हमकों हसतहै
हो उबषी तो जानदेषहिगे पीछें बषी
के गये सब बांदर रूषचढि बोधषसो
टिडार्यो वातक सबभ्रम मारे तातें
हों कहतहों जो बातकोभेद नजानै
ताकों उपदेस नकरिये तबराजा हंस
कही तो आगे कैसी भई आगें को
धकरि पंछीनकही तेरोराजा किनि
राजाकीयोहै मेकुं कह्यो तेरो मयूर
किनराजाकीयोहै यहसुनि मोकोमा
रनभये मेकुं आपनो पराक्रम दिषा
यो जातेपुरुषकों अरसमें छिमाव
फिये जबसत्रु अतिक्रोधसों मारन
भये तबपराक्रम बूझिये जैसें अरस
में श्रीकोलज्या आनरणहै क्रीडाकों
में दिवाई आनरणहै यहसुनिराजा
कह्यो जोअपनो अरुसत्रुको बलु
नबिचारेसंग्राम करै सोपुरुषपाचै

जैसें सबको दोष गदहा मार्यो॥ बगुला क
हीयहकैसी कथा हो॥ राजा कहतहै॥
हस्तिनापुरमें एक बिसालनामा धोबी
रहै॥ ताकेयेक गदहा तादेबकता नि
नुषायेहबरो होइ मरनलागो॥ तबह
हिधेवीबाघको चामवाधिबनके निक
टिहरेधानकेखेतमेंछाड़िआयो॥ धान
माहषाहमोटो नयो॥ बाघजांनिको उनि
कटनजाय॥ एकदिनयेकुरषवारो मू
रोकबरबोदतीरकमानेछेपिरहावह
हगदहावाकोदेखि गदही जांनिपुका
रतवासोंसामहोआयो॥ तबवहिजान्यो
यहतोगदहोहै॥ यहजांनिकरि तीर
करिमार्यो गदहा मुवो॥ तातेहोंकह
तहों॥ बात बिचारिकहिये॥ तबराजा
कही आगेकहो॥ तबउनपंछीनकही
अरेउष्टबका हमारेदसमेंचरतहै ह
मारीयेनिंदाकरतुहै॥ यहबातहमको
सैंसहेतबकहीरे मूर्षतेरोराजा अति

सुखी है वाको राजा न छीनिये जाते जो
सुखी होइ मुहाथऊ की बस्तन राखि
कै सोवइ पृथवी कै सैन राखि है जाते रा
ज्यवा को न छीनिये तरुवा को मीड क
ऊवा को सराहे ताहम सो कहत है उह
ही चलो जाते फल फल छाया सहित
बडो रूख से इये जो फल नांही तो छा
या तो न जाय अरु नान्हे को सेवा नक
रिये बडे को आसरो करिये जाते कल
वारि के हाथि इ धरो इ तो लोग मदेक
है नीचके आसरे ते बडे छोटो देखि
बडो ठाऊ रहो इ ताके नाम ही बडा
ई या ई ये जैसे चंद्रमा के नाम ते समा
खुषी भये मैं कही यह कैसी कथा है
तब उनक ही रोक समेय बर्षा बिनब
षे प्यास मरत स बहाथी न्हके जुथ
पति सों कही स्वामी कहा उपाव कीजे
नी नांही तब उन्ह कही एक बडो

सरोवर हे चले॥ तहां सरोवर के तो
र॥ स्वसा सर्व रहें॥ ते हाथीन्के पाव
तर चापे गये॥ तहां एक सिलीमुख ना
मस्से बिचारे॥ जे ए हाथी नित ही आ
वहें॥ तो ए को समा न वचे॥ यह सुनि
बिजे नाम ससा कही॥ मत डर करो
या को उपाव हों करिहों॥ यह कहि चि
त्यो॥ पिंडे मंजा त बिचारयो॥ कैसे हो
हाथीन्से ठाढो होइ बात कहें॥ जो
तेंछु वत ही हाथी मारें॥ सूघत्त को सा
थ काटे॥ राजा पात्र को मारे॥ डर्जन
हस्त ही मारे॥ तातें हों पर वत चढि
हे तब कहिहों॥ जब उनि पर बत च
ढि दिषाइ दीन्ही॥ तब गजराज कही
तू कौन हे हि कहां ते आयो॥ तब ससा
कही॥ मैं चंद्रमा को सेवक हे॥ तिहें
पास पठाये हैं॥ हाथी कही कहा क
ये सो कहो॥

जूनकहै अरु इपपुनिमारिबेनां
कह्यौ तातैजोचंद्रमाकहीहैसोंद
हिहौं यहमामेरचंद्रमरोवरकेरह
वारहैं तुममारिषदनलोनाहीकं
यो वेमेरेराखेहैं याहीतेमेरोनाम
समांकहै इतकोवचनसुनिडरा
इगजराजकही इहिबारबिनजांनै
आयें अबनआवहिगे देषियास
रोवरमेंचंद्रमारिसुकरिकायजुहे
तबआईदंडवतकरिछिमाकराइ
जाइ तबवैरानिकोंतेजायपानी
मंत्रतिबंबदिषाई गजराजतेडंड
वतकराई मसेकहीराजबिनजां
नैईयहअपराधकीयोहै ईहबा
रबकसियें यहकहिहायी बिदा
कीनों तातैंकहतहोबडेकेना
महीतेसिधिहोई तबमैंत्रीसीक
ही जोहमारोवाकरबडोपतापी

है॥ यहसुनिसबलोकोंराजापासिएक
रिलेगये॥लोकोंदियाहराजाकोदंड
वतकरिकह्यो॥राजदेशोयहदुष्ट
मारदेसमेंचरै॥हमारीनिंदाकरैतहै
राजाकहीयहकोनहै॥कहातेआयो
है॥पंछीनकहीहिरंन्यगनेराजाको
सबकहै॥कपूरदीपतेआयोहै॥
तबवाकोमंत्रीगीधतिनपूछी॥ते
राराजाकेमंत्रीकोनुहै॥मेंकहीस
बेगपनामचक्रवाकहै॥बूझियेआ
पनेदेसकोहै॥जातेआपनेदसको
होइ॥ऊतआचारकरियुतहो
इ॥अकोरतलेई॥जुधनीकेंजानें
बसनकनेंनहोइ॥काछकरिदि
ढहोइ॥सास्त्रजानतोहोइ॥परंपरा
चलिआयोहोइ॥प्रसिधहोइ॥ऊम
उपराजिजानें॥ऐसीमंत्रीकहियें
अथवाकरियें॥ २९ क३

वाबोल्यो कर्पूरदीपनाकोंदीपजं
बूदीपहीमें तेऊदीपउम्मरोहोग
ज्यहै राजाऊंकहीयहवातत्रैसी
येहै जातेंराजानमंत बालक
धनीश्री एजोप्याहबेलाहकनहीं
ताहिबांछे जोपाहबेलाहकता
हिकेंछाडहि तबमेंकहीजेउम्म
रेराजाकीवऊरहतिवातनिही
होइ तोहमारेऊ राजासारेजंबू
दीपकोवाऊरहै तबसूवाकही
केजांनिये मेंकहीजुधतेंजानि
यें तबहसिकेराजा बोले जाहआ
पनेंराजाकोंसावधानकरि त्म
आवतहै तबमेंकहीत्रयनें
बसीउपवाऊ राजाकहीकोंन
पवाईये जातेंजोस्वामीकोंभक्त
होइ गुणीबिचक्षणहोइ चतुर

दीतव्यसनरहित॥ क्षिमायुक्त॥ ब्रा
ह्मणपरायेमनकीजांनैं॥ ऐतरफु
रे॥ श्रीमौबसीतकरिये॥ तातेंस्वा
पठाइये॥ सुकतुमहीयाकेंसाथ
जाऊ॥ तबनृपकही॥ राजाकीआ
ग्यामाथेपरयेंयाकुष्टकेसाथकुन
जाऊहौं॥ जातेंयहकहीदै॥ कुष्ट
छुराईकरै॥ साधकेसिरजाय॥ जा
तरांवणकीताहरीबांधीसमुद्र॥
कुष्टकेसाथनबैठियेनचलिये॥ जै
सेंकागकेसंगनबैठहंसनमारयो
चलतबटैरिमारी॥ राजाकहीयह
कैसीकथाहैं॥ स्वाकहउहै॥ उजैन्य
कैयेढ़ मैबनभीतयेकबडोपीपर
कोरूषरहै॥ तापरयेकहंसयेकका
गबहुतदिनतेरहैं॥ ग्रीष्मसमयवि
षंयेकबटोही॥ तीरकमांनिकट
रा षि

घरीएक बीतेंमुषकी छांहगई त
बधामलागतिदषिदयातेहषउय
रतेहंसछांहकीनीतबकागसमें
पाहवाकेमुषपरबिष्टाकीनीउडि
गयो॥ वहजागिदषेउथतोहंस
तबजान्योजोयाहीकोकांम तब
तीरकरिहंसमारयो॥ तातेहोंकह
तहोंडुष्टकेसंगनबैठिये॥ अरु
डबटेरिकीकथासुनऊ॥ एकदि
नसबेपंछीगरुडकीजात्राकौस
मुषकीतीरचले॥ तहांकागको
साथएकबटेरचली॥ पैडमेंएक
अहीरीदहीलीयेंजाय॥ सोकाग
बारबारचहदहीषाइ॥ जबउनदे
ष्योमडुकीमूडतेउतारी॥ कागभा
जिगयो॥ बटेरिमारी॥ तातेडुष्ट
कसाथकबऊनचलिये॥ तबमे
कह्योभाईसुवाहमसोअैसीका

देकहतहो॥हमरोजैसेंराजातैसे
तुम॥सूवाकह्योहैतोअैसीअै
तोकुछजैनकीमीठीबातैंअैसी॥ती
तिनकरिये॥तुम्हारीदुष्टतावा
तनहींजानी॥जातैंहुंराजातें
उपज्यो॥मूर्षनलीकुस्तुतिकी
यैरीकोजैसेंमूरषबदईजारस
हितश्रीलैनाच्यो॥राजाकह्यो
यहकैसीकथाहै॥सूवाकहत
है॥जोबनश्रीनामनगरीहैता
मेंमंदमतिनांमयेकबदईबसै
सोआयनीश्रीकोजिनचारणी
जाणैं॥परिकबहुयेकनबैठन
दैवै॥तबनिपरिछाकोंअस्त्री
बोंकह्यो॥औरगावनातहैंदि
नाचारिलागिहै॥यहकहिकै
सयेकतैंफिरिआइषाटतरि
छिपिरहो॥

सक्कारोदीजारबुलायो वासोंमि
लिषाटयरक्रीडाकरत वाकेश्रा
गसोंभटकेतेंश्रीजान्यो मरीय
रिक्यांकोंभत्रीषाट तरहे यहजा
निउचतीभई तबजारकहीकाहे
रमनुकाहेनाहि नानिकहीजोमे
रश्रांनकोंठाकरगावगयोहे तो
तेयहगावमेरेनेषेंउजारिहै जो
श्रेमाहेभहतोछाडिकोंगयो त
बहुनिकहीरेबावरेश्रेसेनबूझि
यैजैसेंतुमकहतहो दषिजोस्त्री
भत्रीकोंगारीकुदीयेभसंनरहै
सोस्त्रीधर्मकोंपावै बनमेरहोघ
रमेंरहो पापीश्रधर्मात्माहोइ
श्रेसोभत्रीजाकेंप्रियहै सोउत
म लोकपावै श्ररुभत्रीश्रीको
बडोसिंगारहै भत्रीबिनापरमसु
दरीकुंनीकीनलागै जारतूपा

नक्षत्रको भोग गये कछु घडीको है
वहतो मरो ठाकुर॥ सब अपराध
बक सिबेता इक॥ जो तें वहजी
वतो तो जीवति है॥ मरि है तो दा
कं साथि हो जैहैं॥ जो तें मनुष्य
के देह में जितनो रोम है॥ इतने व
र्ष स्वर्ग भोग करे॥ जो सहगामनी
होय॥ अरु जे सो सर्प है रो मंत्र के
जोर तें सर्प कढै॥ तें नरक तें श्रीपु
रुष को काढै॥ यह सुनि बदई॥ उ
क्त सहित षाट मूड करतें नाचन ल
गो॥ ताते ऊ कहते हैं॥ मूर्ष नतो स्त
ति की ये प्रसन्न होइ॥ राजा हंस कहे
तो आगे कैसो भई॥ तब बगुला व
हो न निराजा जैसी इती पूजा होइ
तैसी करि बिदा कीनी॥ पीछें सूवा
आवतु है॥ यह जानि जैसी बूझि
तैसो करो॥

कही राजा यह बुलाओ और हुंदेस
जाय करि राजा को जथा सक्ति का
र्य करिआयो राजा कुष्ट को स्वभा
व यह जो बिन काज कुछ न हुवा
जावै राजा कही जो भयो ता को कों
न पछितावो अब आगे न करियो सो
कर तब मंत्री कही राजा ऐका
तक हिये जाते लेष कै आकार तें बो
लिवे तें नेत्र मुष की सैन तें चल
रहो इसो मन की बात जानै ताते
एकांत ही में मंत्र जानि करिये तब
राजा अरु मंत्री दोऊ रहे और सब
निदा कीये तब चक्रवा कही राज
मैं जांनी या काहू को कहै कार्ज क
रिआयो जाते बैद्य रोगी ही चाहै
अधिकारी ठाकुर की बिग्रह ताचो
है राजा सूरमे चक चाहै तब राजा
कही होनहार को कारन बिचारहिंगे

अब जो कोय चाहिये सोक हो॥ मंत्री कहो
ए कु जा सूस पठाइये॥ उन को कटक और
बिचार जानि आवै॥ जो तैं अपने अरु औ
रक दे स को द्यो हार जानि बेकं जा सुमने
चै हो॥ जा के जा सूस नां हो सो आधरो दै॥
जो तैं जा सूस रये क प्रतीती जा वो॥ वह न
हां हो रहै॥ या के हाथि सब क हिने जो॥ जा
तैं यह क दीहै॥ तो यै आश्रम दे वा ले॥ सा ध
क वि परस्त छिक री॥ तप सी सं न्या सो को ने
ष कीये सब स मा चार जानै॥ तब मंत्री कहा
बु लाप ठाइ जो॥ वा के बालअस्त्री हां आ
नि राखि जो॥ राजा यह बात गुप्त राखिये॥
जो मंत्र औ छे कान मे जाय तो फूटै तो स
मा धान न हो इ॥ राजा बिचार क हो॥ पाया
नो को जा सूस॥ मंत्री कहो तो उभ सों संग्राम
जो यो॥ इह बीचि पो लियो आय क हो॥
राजा जंबू दीप ते सूचा आयो को रा हो है॥
राजा चक्रवाक को मुख

कही राजा यह बुलाओ और हुंदेस
जाय करि राजा को जथा सक्ति का
यैक रिझाय़ो राजा तुष्ट को स्वप्ना
वय़ यह जो हि नका जऊ कलहउप
जाव़ै राजा कही जो भय़ो ता कौ कौं
नपछितावो अब आगे बूझिय़ेसो
कर तब मंत्री कही राजा ऐकां।
तक हिहै जातें लेष कै आकार तैं बो
लिव़ैतैं नेत्र मुष की सैंनतैं चउ
रहो इसो मन की बात जानै तातैं
ऐकांत ही मैं मंत्र जानि करिय़े तब
राजा अरु मंत्री दोऊ रहे और सब
निदा कीय़े तब चक्रधा कही राजा
मैं जांनी या काऊ कौ कहै कार्जक
रिआय़ो जातें बैद्य रोगी ही चाहै
अधिकारी ठाकर की बिग्रहता चो
हे राजा सूरमे चक चाहै तब राजा
कही होउ या कौ कारन बिचारहिगे

अब जो कोऊ चाहिये शोक हो॥ मंत्री कही
एक जासूस पठाइये॥ उन को कटक और
बिचार जानि आवै॥ जो तिन अपने अरु
रके देस को द्रोहार जानि बेकं जासूस ने
चैहै॥ जा के जासूस नाही सो आंधरो है॥
जो तें जासूस ए एक प्रतीती जावै॥ वहां
हांही रहै॥ या के हाथि सबकछि जो॥ जा
तें यह कछु दीहै॥ तो ये आश्रम देवाले॥ सा
कछि परस्तछिकरि॥ तपसी॥ सन्यासी कोने
ष कीये सब समाचार जानै॥ तब मंत्री कहै
गुप्त पठाइजै॥ वा के बालअस्त्री इहां आ
निराखिजै॥ राजा यह बात गुप्त राखिये॥
जो मंत्र औछे कानमे जाय तो फूटै तो स
माधान नहीं॥ राजा बिचार कहै॥ पायो
नी कौजासूस॥ मंत्री कहै तो उभसों संग्राम
जो सौ॥ यह बिचि पोलियो आय कहै॥
राजा जंबूदीप ते सचा आयो कोरा दीहै॥

चक्रबाक कहीं फरहषानेमें डेरा
देऊ पीछेराजाकौं मिलावहिगेय़
हशुनिपौलिय़ागय़ो तबराजाक
हीं बिग्रहतौनुपज्यो तौऊबिनबि
चारैं माहसबिग्रहनकरिय़े जातैं
पहलैंहीयुधकरनकहै कैनृमिछा
डनकहैसोकाहेकौमंत्री मत्रकौं
जानिकरिजीतिबेकोजतनकरै जा
तेयुधमैंसदेहहै जौलौंसंग्राममैंश्रो
रकौंसामृथनदेषैं तौलौंसबेसूर
कहावै तातैं वाकौंबिरजामिसंग्रा
मकरिय़े समो जानिजोजतनक
रिय़ेसोकाल्नपाइसिद्धहोई जैसे
बर्षाकालमेंबोय़ाधानसमेंपाइ
फलै अरुमहंतकेयेगुणहैं इर
हीतैंडराइ नारैंआय़ेसरताकरै
ब्यपतिमैंधीर्यकरैं सर्वकार्जसि
धिउताय़लीकीय़ेनहोइ अतिज

इपाणि हैतो कहा पर्वत फोरि है
राजा बिसेषतैं चित्रबर्न महाबली
है। तातैं बली सौं युध करियै सो।
जो गिनाहीं। जैसैं पग्यादौ हाथी ल
तकरि मारै तो कहा मास्यो जाइ त्रै
सैं बिन जानैं युध करै सो मूर्ष।।
बली सौं युध करियै तैसैं चीटी के
पाषमरण कौं आवै। अरु जो यु
ध कौ समो न होइ। तो कछू हा कौ
सो मैं कोच करि दै। समय पाइ सा
सकौ सो फन काढ़ियै ही ति है। जो
छोटो कहो इ उपाव जांनै। तो बड़े
सत्रु कौं मारि। जैसैं नदी कौ प्रवाह
बड़े रूष कौं गिरावै। अरु व्रस्त्र
तौ तौरा षियै जो तौ गढ़ साजियै।
जातैं कोट पर कोपे कै जोध जोधा
कौ मारै। जा दैसमैं गढ़ नांही। तो
दैसमैं। अजार हिन सकौ.

ट। तलैबंधक गंभीर। बज्रतनांति
जंत्रनालिराषिये। आगैंबनराषि
ये। अंनरसईधनराषिये। तबराज
कहीगढसुक्षरिबेकोंनुकरियें।
मंत्रीकहीजोजिहनाइकहोइ।
ताकोंतैसोकामसोंपियें। जोका
मदेषोनहोइ सुपंडितऊकैंकरै
नहोइ। तातैसारसबुलाईयें। आ
गैसारसआयेदषिराजाकहीसा
रसतुमकोनगढचिंतारऊ। तब
जुहारकरिकहीराजागढतोय
हैबज्रतनीकोचितारयोहै याकै
माफ टापूमैंसबसंचैकरियें। जा
तैंअनकोसंचोसबसंचैतबडो
सोनोरह्यो मुखमतैतेपाणानरहै
अनहीतैपैरहैं। औरलौनबडोरस
जाबिनसबविंजनगोबरसलागै।
राजाकहीबिगिसंचोकरो। इहबी

चपोलिया आय कही। राजा सिं
घलदीय एक काग आयो है। राज
कपाव देषन चाहत है। राजा कही
काग सब जानें। इरलो देषो वाको
राषिये। तब मंत्री कही तो नली
पे काग यत्न कों पठाई है। सहस्र
रो सत्र कोस हाइ है। यह नरा षि
आगे जो आप नों यछि छोडि श्रो
र कों राषे सो मरे। जैसें नीलरंगपो
स्यार मार्यो। राजा कही यह कै
सी कथा है। मंत्री कहत है। एक
समे यक स्यार गाव के निकटि
फिरत। नील के माट में पर्यो।
निकसि न सक्यो। वे आपको
मूवा जना इयरि रही। तब नील
र आइ माट ते काढि बाहरि भा
ए आयो। तब उहां तें भागि ब
नमें गयो। आपनो रंग दे

चारन लागेंगे॥ अबमेरो रंग भलो
नयो है॥ तातें जु बन काई हो इसो
करों॥ ह्यां बिचारि सबस्यार बु
लाई॥ कहो आज बन देवता मो
कों अपने हाथि सबै औषधीनक
रि॥ अभिषेक करि मोकों राज्यति
लक दीयो है॥ तातें आजु तेया ब
नमें मेरी आग्या मा निरहो॥ स्या
रसबनको नयो रंग देखि डंड व्रत
करि बोल्यो॥ जैसें राजा की आग्या
तैसें ही करहिंगे॥ तब आपनी ग्या
तिकी आदर पाइ॥ और कबनके
पश्न सों बे सिया कहीं सकोरा
जान्यो है॥ तब बाघ सिंघ रीछ से
बक पाइकें स्यार मारिखेदे तब
सबस्यार रुषी दिग्यो कबहू देख्या
नकही॥ तुम रुषमति करो॥ यहनी
ति नाही जानत॥ हम या कोक

मैं जानत हैं॥ हमारी इन अवगुणा
करी॥ तातैं थोरी ही दिन मैं नास क
रिहैं॥ जातैं वे सब निजानें सेवा कर
तहैं॥ जैसो वाको स्वभाव निजानैं ते
सं करिहो॥ जाइ निकट हो इ सब
मिलि साफ़को पुकारो॥ तब दमा
रो सब्द सुनि स्वभावही वोऊ पुकारि
है॥ जो जाको स्वभाव है सो छाडि न
सकै॥ जैसें कूकर राज्य बैठारिये तो
ऊ पनहीचाटिबो न छाडै॥ यह सुनि
नरेंजाइ॥ सब मिलि पुकारे॥ चंद
उकारि उठा॥ तब बाघ जान्यो मा
रिडास्यो॥ तातैं हौं कहतहैं बिना
जानें पराये नराखिये॥ राजा कही
जदपि अति सोयहै॥ तोऊ इन देसतें
आयो है॥ बुलाइ दीजिये॥ जो राखि
बे लाइक होगो तो राखिहैं॥ तब
चकवा कही

ज्यो ॥ जा सूसनेज्यो ॥ अबस्व
की बातेंसुनेविदाकरो ॥ अरु
आयनोंलोगसबबुलाइबेगरि
ये ॥ पीछेहूतबुलाईये ॥ जातेंचा
नकमंत्रीहूतहीसेंनंदनामराजा
मरायो ॥ तातेंअकेलेवेहूतनबु
लाईये ॥ सवारीकेंसाथिकागबु
लाईये ॥ पीछेसनाथेकत्रकरि
सूवाकागबुलाये ॥ सूवाआईमा
यनाहूकह्यो ॥ अहोहिरंण्यगर्भ
राजाचित्रबर्नराजातुमसोंयह
आग्यादीनीहै ॥ जोघाणअरुरा
ज्यराघ्योचाहो ॥ तोबेगिआहूहमा
रेंपाहूनुपरें ॥ नातरआपकोतोरक
रहूं ॥ तबराजाकहीक्रोधकरिकही
हमारेहरेकोऊजयागढकोंबरजै
यहसुनिमेघबर्नेनामकह्योराजामो

कोंआगपादेहुतोयाडुष्टकोमारोंत
बचक्रवाकराजासोंअरुकागसोंक
हो।समाधानकरोलागे।सोसत्यनां
हीजहांदुष्टोनबैठे।तिष्टेनाहीतेध
रमनकरहि।सोधर्मनांहीजहांसत्य
नहोइ।सोसत्यनाहीजहांकपट
होइ।जातेंधर्मरहैजोबसीठमले
छोहोइतनमारिये।बसीठराजाको
मुखहो।जोकोऊमारिबेकोंसस्त्रउ
ठाइ।तोऊऊतनबोलो।अरुदूतेके
कहेंआपनीहीनता।।अरुपरायोव
डपनजोमानें।सोमूर्ख।तातेंकहमा
रनोनांही।।वहसबकहो।यहसुनिरा
जाक्रोधछाडो।तबसूवानडिचल्यो।।
चक्रवाकसूवासनाइआनि।सोंनके
अलंकारदेविदाकीयो।।तबसूवा।
जाइअपनेराजासोंजुहारकीयो।चि
त्रबर्नपूछीसुकउहाकीवा

सी। अरु वहदेसकेसो। तबसूवाक
ही राजापहलेही यहजुधकरियेकपू
रदीपस्वर्गलोकहै। हमसोंवरनीनजा
य। तबराजाने मंत्रीबुलाई मंत्रकरा
नलागो। राजामंत्रीनसोंनकही सूवा
कहतहैसंग्रामकरिये। ऐसेसमे
मंत्रबूझियेसोकहो। मेरेजानेंजुधकी
येहीबनें। श्लोक। असंतुष्टाद्विजानृ
पासंतोषंगमहीपति। सलज्जागणि
कानष्टानिर्लज्जाचकुलांगना। टी०
जातेंब्राह्मण असंतोषी होइ राजा
संतोषीहोइ बेस्यालज्जाकरै। कुल
बधूनिर्लज्जहोइ ए तेथोरेही दिनमें
नष्टजाय। यहसुनिइंद्रसीनाम
गीधबोल्यो। राजाआपनें मित्र मंत्री
प्रजानजीकहोहि। सत्रुकेमंत्री मित्र
प्रजाबिरुधहोइ तोजुधकरिये। अ
रुनमि मित्रप्रव्यापवंतजांनियेतो

युध करिये॥ जातैं जुध करैं तौ न फल हौं॥
राजा कह्यौ हमारे लोक नु जहषानैं कौं
हैं॥ कि काजु कौ हौं॥ तौ ज्योतिषी बुलावौ
वेगि या त्रा कौं नी कौ लग्न देखि तब मं
त्री कही राजा अबही बेगि जात्रा न
करिये॥ जौ सत्रु कौ बल जानैं बिना वा
की भूमि मैं जाइ तौ मारयौ जाइ॥ राजा क
ही मंत्री मेरे उछाह कौ मन भंग मति
करौ॥ जो पराई भूमि मिलयौ चाहै ता कौ
उपाव कहौ॥ तब गीध कही राजा क
हैं बिन कीयें न होइ॥ राजा कौं मंत्री
कीयें कहा सिधि जो उपाय न करिये
जैसे औषध कौ जानैं ही रोग न जाय:
बायें पैं न जाइ॥ तौ ऊ राजकी आग्या न
मेटिये॥ तातैं हौं कहुं हौं॥ राजा सुन
ऊ॥ जहां यह तहां बन होइ॥ नदी
होइ॥ अरु जहां डर कौ ठौर होइ॥ तहां
सेना यति कटक ऐक ठौर — रिचै

येकसेनापतिचलेंचलैंसूरआगैंच
लैं माऊमहलठाकुरभंडारीकोलो
गचलैं अरुबोपारीचलैं इनकीड
हींकोंतिपयादेचलैं पाछेएकओर
सेनापतियाकेजनकीषबरिलेतच
लैं राजाचलेचलेजोक्षान्सहितमा
झचलैं सबकीरक्षाकरत जहांपर्ब
तमानीविषमभूमिहोइ तहांहाथी
चलियें बराबरिभूमिमेंघोराचढि
चलियें पानीमेंनावचढिचलियें
यहादेसबठौरचाहियें बरषामेंहा
थीनावकोबलु औरसमेंघोरायहा
दवौबलुसदाकरियें विषमभूमि
मेंविषमयेडमेंजोधाराजाकीरक्षाक
रै राजाआपनऊजोगेश्वरकीनिश
औरभूषकरै अरुबनवासीअरुप
र्वतबासीलोगअगेंकीजे जहांराजा
चलैतहांभंडारसाथचलै भंडार

बिनाश्रुतानाही।।तले तलेजो धानै
कोंद्र बिदीजे।।दीये कोननबूझै।जाते
मनुष्यमनुष्यकोसेवकधनही कैहो
तहै।।मनुष्यद्रव्यही तैंबडोरछोटोस
बुकोंछेकिरहिये।दिसत्रुटिषाइये
सत्रुकोत्रिणअनरुधनमारिलीजो।त
लाचफोरिये।।कोटदाहिये।खंधकपू
रियो।सबतैंबडोबलहाथीको।जाके
अंगमेंआठआयुधहैं।चारिपाद्दोइ
दंतएकशुंडिएकनथुनं।अरुकट
ककोंचलेतैकोटहै।।अरुघोराजा
केन्हूमिताहीकी जेघोरेत्रदियुधक
रतहै।।ताहिदेवतानी तिनसकोंत्र
रुकित्तीकोहरिसत्रैहै।।वाकेहाथहीं
नहै।।पहलेजोधकेआपनीसेनाकीर
क्षाकरेपेडोदिसापयादेनकरिके
जोनियो।।स्वभावहीतेसूरजुधजानैं।।
स्वामितेउदासनहोइ।।अमजीतैहोय

प्रसिद्ध होइ रजपूत बकृत होइ जा
की श्रीसी सना होइ ताकी जय होइ
अरु जैसें ताकर के प्रिय बचनसों
जो धाल रै तैसें बकृत दीयें कृनल
रें जिह कटक में जो क्षुद्र व्यकरि
षी होइ ताहि को उज्जीतिन सकै
गनती के बकृत नये तें कहा वेय
हत्ते हीं नाजें वा कों दे सें नत्ते नुना
जें जब काज करि आवे तब जोप
सादन कीज्ये चहदीव को वहराई
ये गुण न मानें तौ सेवक उदास हो
य अरु जो राजा सत्र कों जीत्यो चा
हे तौ थोरा थोरा चले जो कटक रु
षी न होइ बकृत चले तौ रुषी भयो
सत्रु सुषी ही मारे सत्र के भाई बंध
फोरि आपनें करि यहि पीछें राजा के
मंत्री बेरासों ने दृढ़ राजिये जिहतैरा
जा के चित उदेग होय अरु जासू मके म

चकै छत्र सत्रुको मनभंग करिये
अथवा गोरू हरिये॥ उनहि चिंडा
इबेकों प्रधान आवेता हि वाधिये
सत्रुको देसनजारिये आपनो बसा
ये॥ अथवा आपनो ईकोरा खिये॥
जातें बसाय ही तें दामनु पजे॥ राजा
कहीं बकुत कहा जातें आपनो उ
दोहोइ॥ सत्रुकी हानि होइ सोई क
रिये॥ यहै नीतिसा स्त्रकों पैडो॥ नि
नआपनी उमगा उमगमें सा स्त्र वि
चारिये तो न मिले॥ तब जो तिषी को
कीये तन गनमें जात्रा की नी॥ तब इह
जाइ हि रंन्य गनमें सौं कही॥ राजा नि
चब नेनी रें आयो॥ मलय यबंत कै
हे वडी राचीन्हे हैं॥ गढकी रषा क
रो॥ जातें वाकों गीध चडो मंत्री है
मेवाकी बात निहीजान्यो॥ नि

हमारे गढ मैं आपनो को ऊ इष्ट पठा
यो है चक्रवाक राजा या का गवा
ही को है राजा कही यह न हो इ
जो वा को पठायो है तो सूवा को मा
हल ही आयो मंत्री कही तो ऊ नये
ते ऊ गये राजा कही को नु नयो नय
कार करत है देषु औरौं जो हित क
रै तो बंधु जानिये बंधु जो अहित हो इ
तो सत्रु जानिये जैसे आपने देह तें
उपजी व्याधि सत्रु है बन की औषदि
हित है सुपक नाम राजा ता के बी
रबर सेवक ऊ तो तिनियो रही दिन
में राजा के काज को आपनें पुत्र को
मांयो का टि दीये मंत्री बूझी यह कै
सी कथा है राजा कह ऊ है मैं पहलै
सूपक नाम राजा के क्रीडा के सरोव
रमें कर्पूर के तिना म राजा हंस ता

कीकर्पूरमंजरीनामबेटी॥तासैंहौं
आसक्तभयौ॥तहांयेकवीरबरना
मराजपूत॥आइराजाकैंघरिगयौ
होइ॥पौलियासौंकही॥हौंचाकरी
कौंआयौहौं॥मोहिराजाकौंमिला
उ॥तबराजाकौंमिलाइकै॥यहक
ही॥राजाहमसेसेवककौंकायेहो
इतौबर्तनदेराषियै॥राजाकही॥तेरौ
बर्तनकितनौ॥तबउनिकहीपांच
सपलसौंनौंपावतौरहै॥राजाकही
तेरोजोरकितनौहै॥उनिकहीदो
इहाथअरुएकघाडै॥राजाकही॥
हमसौंनदीयोजाय॥यहसुनिबीरब
रजुहारकरिचल्यौ॥तबमंत्रीकही
श्रेमीनबूझियै॥राजाचारिदिनकौ
वर्तनदेराषियै॥इतनैंलाईकहैकि
नांही॥तबमंत्रीकेकहैंराजापान
दैवाकौंदियौ॥वाकोऐ

तनदीयो राजाजासूसपठायो देषो
इतनोसोनोंकहाकरै तबबीरडेराजा
यःआखोसोनैंदेवब्राह्मणकोंदीयो
चाथोहिसोकंगालंकोंदयो येकहि
सोंआपणेंघरघरचो इहभातिनि
त्यहीराजघरिठाडोरहै तबराजाआ
ग्यादेइतबघडीघडीएकघरिकजां
इएकसमैंअधियारीचोदसिकीआ
धीरातिकरुणासहितएकश्रीराजा
सुनी तबराजाबोल्यो हैकोऊदरबा
रि तबउनिकहीराजाहोंबीरबरहो
राजाकहीदेषिआवकोंनरावतहै जो
राजाकीआगपायहकहिचल्यो तब
राजाकहीयहनबूझियेजोऐसीआ
धियारीरातिमेंरजपूतआकेलाजाइ
मेंकुंयाकोंपाछेंजांउदिषोंधेंयहक
हाकरै तबराजाषांडौतेवाकेपीछें
चल्यो बीरबरउहांजाइकेरूपजो

बनसंपूर्ण॥ बस्त्र अलंकार यहरें एक
श्रीरावत देषी॥ तब पूछी तू कौन दे
हि॥ सुनि कही हौं या राजा की श्री लछि
मी हौं॥ बहुत दिन या राजा कै आसि
रे रही॥ अब मैं या हि छाडि हौं॥ तातैं
स्नेह तेरो वति हौं॥ तब बीरकही कौं
नैं कृ नांति तेरो रहिबो होई जी॥ सुनि
कही ये कृ नांति रहौं॥ जो तैं सक्ति बर
आपनें बेटा कौ आपनें हाथि मारि
सब मंगलादेबी कौ दे हि॥ तौ मैं बहु
त काल रहौं॥ यह कहि लोप भई॥ त
ब बीरघ राजा यदो कृ जगाये॥ लछि
मी कौ बचन सब कह्यौ॥ यह सुनि
सक्ति बर आनंद सौं बोल्यो॥ धन्य हौ
जो मो तैं राजा की रक्षा होय॥ तौ पिता
बिलंब काहे करत हौ॥ तब कृ जो
यह ऐसें काज आवै तौ सतावै॥
जातैं धन अरु प्राण यं डित हो इसो

परगये कार्यकों देइ ऐक दिना नामे
है तब सक्तिबरकी माता बोली
जो तुम इतनो कारजनकरुगे तो
इतनो बर्त्तन षाणेके रिणतें कैसें छू
टुगे यह बिचारि सबदेवीके
मंडफमें गये महादेवकी पूजाक
रि यहकही देवी राजासूं कांकों
बिजय होउ राजलक्ष्मी स्थिर होइ
तुमजोबलि मागोसो लेऊ यहक
हि सक्तिबरको माथो काट्यो तब
बीरबरबिचारी राजाके बर्त्तनके
रिणतें तो छूटो अबपुत्रबिनाजीव
वनयुक्तनाही यहबिचारि आपनों
मूडकाट्यो तबस्वामीकों अरुपुत्र
कोसाकजा निश्रीपुनिगरोकाटि
मुई आगें राजा यहदषिबिचारत
भयो हमसारिषेजीवबछतनप
जतहें अरुमरतहो परियारजपू

तसा रिषि नये नहो इहै॥ यह बिचा
रि राजा कुं आपनो मूड काटिबे को
षाडा तयो॥ तब देवी हाथ पकरयो
कह्यो पुत्र ऐसो साहस मति कर
हि॥ अबतेरे राज्य को भंग नाही॥ त
ब राजा अष्टांग डंडवत करि कह्यो
हवी जो मो बिषें दया हो॥ येती न्यो
मरी आयु दीतंजी वो॥ मेरो जो लि
ष्यो हे सो हो इहै॥ तब देवी कहा
से वक परतेरो मेट्यो बिहो गुसी॥
नहीं॥ जाकु बिजय होनु येती न्योंजी
वक॥ तब बीरबरु बिआपनें पु
त्र पुत्रश्री साहित घर गये॥ राजा बि
नही जनायें आपनें मन्त्र जायसो
रच्या॥ प्रातनये बीरबर जायकु
रें गडो नयो॥ तब राजा बुलाइ
पूछ्यो॥ बीरबर तू कहा दे बिआयो
तब ऊनि कही राजा येक श्रीरे

वतकृती मोहिदेखि छपिगई
औरकछुबातनाहीं ताकोबच
नमुनिराजासंतोषपायविचारत
भयो यहबडोमहापुरुषहै बडो
सूरहै यावकीस्तुतिनकरीजाय
जातेदयावंतहोइ मृयबचनंकहै
सूरहोइ आपनीबडाईनकरै दाता
होइ निठुरबचननकहै यहमहा
तकोलक्षणहै येसबातेंसबयामें
हैं आगेंआतहोइ साधुन्कीसभा
महि बीरबरकीवातरातिकीसब
कही यमंनहोइकणाटकोराज्य
दीयो तातेंनयोआयोहोइ ताको
काबुरोहीनकहिये नएऊमेंउ
त्तममध्यमअधमहैं तबचक्रव
कंकही औरकोंदेखिआपनेंम
नमेंऔसीनधरिये जैसेंछत्रीको

दव्य पायो दिषि नाकु मास्यो गयो
राजा कहीयत कैसी कथा है। मंत्री
कहत है॥ अजोध्या मैं चूडा मनि।
नाम क्षत्री रहै॥ तिनि धन पाइ बेकूं
बडो करि महादेव की पूजा की
नी॥ जब पाय हुय नये॥ तब श्री म
हादेवजी की आग्या पाइ कै कुबे
रपुर नां दियो॥ तू आज प्रातही।
छोरकर बाइ॥ हाथ लाठी लेघा
रे छिप्रि रहियहि॥ तब जो निकु क
आवै ताहि मा रियहि॥ तब सन्या
सी सो नै कौ मस्यो घटु हो इहै। तै
बकृत काल विइवकगे॥ तिनि आ
तम यसो ई की यो॥ वो सो ई भयो। यह
दिषि जिनि नाई छोस्की यो है। तिन वि
चार्यो निधि पाइबे कौ तौ यो रौ हीन
पाइहै॥ यहजा नि नांउपु नि छोरक
राइ॥ लाठी लेघारे छ

संन्यासी मिल्या कोआयो ताहिषैंचि
लाठी मास्यो संन्यासी मुवो यहदे
षि राजा के सेवक तिनाईं मारिग्रा
रो तातैं और की बात दे षि विनुजा
नें आपक बझु न करिये तबरा
जा कही पाछिली बात न करिकों
नुजानें भलो है कि बुरो है अब
यह बात रहे जो अबकरनों होइ
सोकहो मलयपर्वतके हेठचि
त्रबनेकोडेरो पस्योहै अबकहा
करिये राजामेंऊजासूस सेंसु
न्योहै जोबडोमंत्रीगीधत्ताकै
कस्यो उनिनमांन्यो तातैंहम
षिकोंजीतदिग जातैं लोभीक्रूर
आलसीझूठा अमावधानकातर
मूरषअधीर जोधानकोआदर
नकरै औसेसत्रुसुषही मारियेहि
तातैं जौलौं वहगढनछेकै तौलौं

नन हि मारिबे कौं नदी के घाट पर्व
त के घाट ए क से नाय ति य ठाई
ये ॥ जातें यह कही है ॥ हूरंत रते
चलिया कौ हो इ ॥ बडी आगि हा
इ इ स्यो हो इ ॥ मूष प्यास क रि इ
षित हो य ॥ आसा ध्यान हो इ जे
वत हो इ ॥ व्याधि क रि इ नि ष्प क
रि पीडत हो इ ॥ फूट य स्यो हो इ ॥
यारो हो इ ॥ ब धित हो इ ॥ आधी मे
हो इ ॥ का दों ध रि पानी क रि व्या
प्त हो इ ॥ चोर नि क रि इ षित हो इ
ऐसो समो जानि क रि मा रिये ॥
अरु डाके के डरतें रा ति जागे पो हो
इ ॥ अमते दिन सोवत हो इ ॥ तो ।
दो रि मारिये ॥ तातें इ मारे जो थाम
में पाइ जा इ मारो ॥ ऐसी जानि चि
त्र बर्न को कटक चक्र त मा स्यो
त ब चित्र बर्न सचिं त

कही ॥ बाबाजी हमारी सेना की रक्षा
का हेन करत हो ॥ कहा मेरो अप
राध हो ॥ देषो जा तें राजा या मंत्री
कों अनादर करे ॥ गर्व लक्ष्मी को
नास करे ॥ बुद्धी रूप को नास क
रे ॥ चंचल हो इ सो लक्ष्मी पावे ॥
घोरो षाइ सो आरोगि ता पावे ॥
आरोगि हो इ सो सुष पावे ॥ अ
भ्यास तें विद्या पावे ॥ विजय ते
धर्म अर्थ जस या वे ॥ तब गांधबो
ल ॥ राजा जो मूर्ष हो इ सो पंडित
के संसर्ग तें बडो सो भा वे ॥ जे
से नदी के तीर को रूष हरो र हो
अरु मदिरा पान की असत्री आ
सक्ति ते सिकार जूवा ॥ अनीति को
द्रव्य अमार्ग को षर्च अरु चन
बडो दंड राजा के इ षण है ॥ अरु
राजा के साहसे वत्न उपाय को

आदर नि करै॥ सो संपदा कौंन पावै
जातैं नयाय अरु साहस कुमैं तछि
मी बसति है तुम अपनै कटक के
गबतैं मेरो वध्यो न की यो॥ अरु
मोसौं बुरो बोले॥ वा अनीति तैं यह
फल होत है॥ जो राजा की नीति चु
कै तौ दोष होइ॥ जै अपथ्य करै तौ
रोगी होइ मरै॥ लछिमी तैं गर्व होइ
मृत्य कौंन कौंन मारै॥ स्त्री कौंन को
नसंताप करै॥ तातैं मैं कुबिचारी
बुधि हीन हौं नातर मेरी कही नीति
कौंन रि करै॥ तातैं जाकी अपनी
बुधि नहीं॥ ता कौं सास्त्र कहा करै॥
जा कौं आंखि नहीं ता कौं आरसी क
हा करै॥ तातैं मैं कुचुप करि रह्यौ॥
तब राजा हाथ जोरि कह्यौ॥ बाबा
हौं तौ मैं तो अपराध॥ अब जो नब
स्यौ है सो तेरो घर जांऊं॥ सो करऊं गी

धकही अबहोमनमेंउपावकर्त
हों जातेदेवतासोंगुरसोंराजासों
ब्राह्मणसों बालकसोंवधसोंरो
गीसोंगुर्बिनसीसोंदुर्बलसोंको
धनकरियेनयज्योहोइतोधमाइ
जा तबहसिकेंराजासोंकह्यो रा
जाजिनिडरऊ समाधानधीजेक
रऊ मंत्रीनकीबुधितबजानिये
तबबिगरेपरसवारेंबैद्यसोजा
नियेजेसंनियातमेंसचारे सुस्थमें
सबेपंडित अरुअज्ञानीथोरेही
मेंअकुलाइ बडेदैतेधीजकरि
बडोकाजे आरंभहि जातेतेरही
अतायकरिबेगिहीगटतोरिकी
त्रिपतापकरिकटकसहितको
हिघरलेजोहै राजाकहीअब
थोरेहीकटकगटकोतोरऊगे
गीधकहीसबहोइहै जोजीत्यो

चाहैसो बिलंब न करै॥ तातैं आ
जु ही जाय गट छे किये॥ यह सुनि
बगुला हंस सौं कही॥ चित्र बर्नी
यो रही कट स्पे गी ध के कहो॥ आ
जु गट छे कौ चाहत हैं॥ तब राजा
हंस कही अब कहा करिये॥ आ
पने कट कमें बिचारहु॥ कौन न
हैं॥ तो यह जानि कैं जा कौं जो हो
ग सौं नौं घो डा कर पडा दी ज्यो यह
बात कही हो॥ जो राजा एकौ कौ
डी अमा रगि धर चै तौ लाष टका
करि जानैं॥ समय प्राइ कोटिक
धर चत्तन सकुचै॥ ता राजा कौं न
छिमी न छाडै॥ अरु जग बिदा
हा आयदा सत्रु मा रिबे कौं॥ सुज
सकौं मित्र करिबे कौं॥ प्रिय श्री
कौं॥ दरिद्री भाई बंध कौं इत्त नी

चोरद्रव्यसुधसोंधरचिये॥मूषेषो
रुषरचकैंडर॥सबनसावै॥ये
सोकोंनहैजोजगातिकोंडरगव
रीछाडै॥राजाकहीऐसेसमैंअ
नित्यागबूझियै॥जातैंआपदा
हीलछिमीजोरिसाई॥मंत्रीकही
तोराष्यो॥नधनजाइ॥तातैंदांन
मांनकरिजोक्षाकोसमाक्षनक
रियै॥जातैंयहकहीहै॥जोआपनो
परायोजांनै॥नछाहीहोय॥प्राणछा
डिबेकोंनिश्चोराषो॥कलीनहोइ
राजाकरिब्हायो होइ॥श्रीसोजो
क्षासत्रकोंमारि॥राजाकीजयक
रहि॥असुनीकेपोष्योहोहि॥मील
करियुक्तहोंहि॥एकमतहोंहि॥
जुधकोनिश्चता॥सत्य॥दया॥त्यागु
ए राजाकेबडेगुनहहि॥जोएगुण

राजा तैं नहीं हि। तौ लौं कोयो क्रय
ज सें करै। राजा मंत्री नकी बडाई स
बेथा करै। जो जा कौं सौंप्यो होइ
ता कै मनैं न ला होई। ता कै बुरे बु
रा होय यहजा नि जो अप्रतीती हो
ई। ता कौं प्राण अरधन सौं पिये। अ
रजा कैं श्री रबाल क पुत्र। मंत्री
हीं हि जा कौं राज्य नर हो। जा कै आ
नंद क्रोधन होइ। अस्त सेवक कौ
दुष भुषन जो नौं। ता कौं पृथी धन न
बधै। जिन मंत्री न नौ बुरो राजा
कै सा थि हो। ऐसे मंत्री कौं राजा
आनंद सौं राषै। जा तैं मद कौ आ
धरो राजा जय का जी सम दुष मैं व
डत मंत्री अवलंबनु हो। आगैं मेघ
बर्नन नाम का ग जो है

रक रिराजा सों बोल्यो ॥ राजदृष्टि
कौ प्रसाद करहु ॥ जुध करिबकों
सत्रु गढ कैं द्वार आयो है ॥ जो आ
ग्या पावौ तौ बाहरि निकसि आप
नों पराक्रम दिषाऊं ॥ तौ राजा के
लोंन तें उरनि होंनु ॥ तब मंत्री का
ही श्रेसी मति करहि जो बाहरि नि
कसि लरिये तौ गढ काहे कौं की
यो ॥ जेसें नाक जल तें निकस्यो कौं
नकुं का जकौं नांही ॥ तातें गढ तें
न निकसिये ॥ राजा आयु ही जाय
युध देषै ॥ जो राजा गढौ होइ देषै
तौ कातर फु नि सिंघ समान तरै
तब गढ कैं द्वार जाइ बडो युध की
यो ॥ तब चित्र वर्न इसरे दिन गो
धसों कही ॥ बाबा जो यत गया की

नीताको निर्वाह करो॥ तबगी
धकहीनता हलोहोइ॥ यौरेजो
चाहैहि॥ राजा मूर्षहोंहि॥ अरु
व्यसनीहोइ जो धाकायरहोहि
तोगढ़टूटै॥ यामहियेकोनाही
तातेंगढ़केलोगनिसोनेदृढ़य
राजियै॥ बकृतेकालछोकेरहिये
अंनपानीकोनिरोधनकीजो॥सब
मिलिसाहसकीजो॥ तोगटपाई
यै॥ तौजैसाबलुहै॥तैसाजतनकी
ज्यै॥ मंत्रीकानमोकही॥ हमारे
कागप्रीतरिहोसोकाजकरिहो
तबप्रातकालचारिहू वारयुद्ध
होतही॥ कागिगावमेंआगिल
गाइकरिपुकारयोगढ़लीयोल
यौकहिपुकारयो॥ यहसब्दसुनि
गावकेलोगसबनाजिपांनीमे
पैठो॥ तातेंसमयप

चक्र रिये॥ नीकोयु क्र करिये नी
कोय राक्र मक रिये॥ यह नीति
है॥ राजा हंस सुधी सुक्र मार दी रि
नसके॥ तातैं ये क सार मसहित
जाते॥ चित्र बनि के क क डा श्रा
इछे के॥ तब हंस कही सा रस तू मे
रेलीये मत रू क हि॥ तू य राई बे को
समर्थ है हि॥ जो इ यांनी मे पैठी॥ हमा
रे पुत्र चूडा रत्न के समस्त की श्रा
ग्या पाइ करि राजा क क्र॥ तब कही
राजा हम सो श्रैसी बात मत क रै॥
जो लों चंद्र सूर्य तो लों तुम क्र सल
रहो॥ राजा मेरे लो क्र मास विच्छो
तन लों हूं सत्र गढ मैं ये चि हिं॥ श्रु
च्छि मा करि यु क्र॥ दाता गुण को
सग्रहै॥ श्रैसो वा क्र न पाईये
राजा क ही मत क्र श्रु नि: कपट
श्रु चत्र रा॥ श्रो मे मेव गा क्र न पाई

ये॥ सारसक

होइ तौ॥ आगि ये॥

ममैंछा
राजा तुमह
रकौछाडे॥

अस्त होइ॥

पस्तो॥ तबक
रिजाजरन ये॥ तब

रुनीतिजोअरुमंत्रीईजोवायुति
कशिरडानोंमंत्रुपरबत्तनंकोआस
परजारहितोयदेसमेंबिग्रहना
तीसरोकथानकोसंग्रहसमाप्तम्
॥३॥श्रीमहादेवानमः॥शुभंभवे
तु॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥आगेबिघ्नु
सर्माकह्यो॥विग्रहतोहमकह्यो॥
अबसंधिकोकथाशुनऊजाकीयदव
थाहैयहकथाहै॥जबबुद्धराजा
नमोसंग्रामभयो॥सेनामारीबुद्धधीच
कबाकमंत्रीनदीकराजासोंसंधिकर
वाई॥तबराजपुत्रनिकहीयदकैसो
कथाहै॥बिघ्नुसर्माकहतुहोतुभ
राजाहंसचकवाकसोंपूछोहमारे
ढमेंआगिकिनलगाईहमारेगढही
बासीककोउनकैमिलिलगाईकिधौ
कोऊनकोगढमेंरहिकरिलगाई
तबचकवाककहीराजातुम्हारोसद

पाछें बऊत कऊ कऊ ज्ञानमलिसारस
मास्यौ ॥ तब चित्र बर्न गढ मैं पैठि
गढ परकौ मालसबलयौ ॥ भाट
नकरिस्तुतिकीरतिकटकमैं चढ़
सारसबडौपुन्यात्मा ॥ जोआपना
सरीरमैंकरिराजाराष्यौ ॥ जातैंगा
ऽबछरा बऊतजननिहौं ॥ तामैंय़े
कपैकोनसमर्थहोऽ ॥ तबबिल्ल
सर्मावाह्मणकही ॥ य़ऽतौआप
नंसत्यकरिबिस्वाहेअरुय़लोक
मैंअपसरासहितसुखभोगवंत
होऽहै ॥ य़ऽबातकहीहै ॥ जोसूरसं
ग्रामभैंठाऊरकेकाजैकौंप्राणछां
डै ॥ तिस्वर्गभोगकरिहि ॥ अरुसूर
जहांकऊंसत्रनकरिमारेहोंहि ॥ तेउ
अरुयलोकपावैं ॥ अपरजोदीनभा
षतौबुरा ॥ अरुराजाकेहाथीघोरा
यादिनमौं ॥ कबऊमतबिग्रहहोउ

अरुनीतिजो अरुमंत्री ईजो कु
हक रिनुडानोंमत्रु॥परबतनको
रेपरजा॥एहितोयदेसमेंबिग्रहना
मतीसरो कथानको संग्रहसमाप्त
यो॥३॥श्रीमदादेवानमः॥कुनंद
त॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥आगेविष्नु
सर्मा कह्यो॥विग्रहतो हमकह्यो॥
अबसंधिकोकथासुनऊ॥जाकीयह
थाहैयहकथाहै॥जबकुऊराजा
नमों संग्रामनयो॥सेनामारी॥कुऊदेस
ऊबाकमंत्रीनदीकराजासोंसंधि
वाई॥तबराजपुत्रनिकहीयह
कथाहै॥विष्नुसरमाकहै
राजाहंसचकवाकसों
गढमेंआगिकिनलमा
बासीकोनकेमि
कोऊनकोगढमें
तबचकवाकको

जबंधकागसर्वही कुटंबसहितना
हीदिषियत्तु॥तातेहोंजानतहोंवाही
कोकामहै॥राजाएकछिनविचारि
कही॥ऐसीयेबातहै॥मरेअभाग
तेंयहकहीहै॥जोविचारकीयेका
जैनसाय॥सोमंत्रीकोदोषनाही॥
अपनेंअभागकोदोषहै॥तबमंत्री
कहीयहऔरहुकहीहै॥मनुष्यकों
जबआपदापरै॥तबदेवकोदोष
दोषदेइ॥आपनीकीनीकीनीअ
नीतिनविचारै॥औरजोअपनेहि
तकारी॥मित्रकोकह्योनशुनैं॥सु
कुबुधिजानियै॥काठतेंगिरयोकछ
हाकीसीनाइनसूजाइ॥तबराजाक
हीयहकैसीकथाहै॥चक्रवाकक
हतहै॥मगधदेसमेंएकपद्मफुल्यो
त्पलनामसरोवररहै॥तहांबहुत
कालतेदैहंसरहै॥उनकोमित्रए

कछुहारहो।तहांएकसमेंजीवस्त्रा
इकहो॥आजुहांवसिसरोवरकी
मछरीकछुहासबभाखिहो॥यहसु
निकछुहाहंससोंकही॥जिनजीव
रकीबातसुनीअबहोंकहाकरैं॥
हंसकहीअबहीअबहीदेषहुउ
पावबिचारहिगे॥कछुहाकहीय
हजिनिकहोबिचारिबकोठौरनां
हीं॥जातेयहकहहिजोआपदा
कैबिनुआयेनपावकरै॥अथवा
आपदाआयेहैकंपावकरैतिहा
रसुबपावैंहि॥जोअसेंकहैकैहसु
होऊ॥कौनउपावकरैसोनहजा
जैसोसरोवरकीमछलीनेउपायो॥
हंसनकहीयहकैसीकथाहैकछु
हाकहतहो॥पहलेंयासरोवरमैं
सीभांतिनबजीवस्त्रायेतबतिन
मछरीमिलिविचारयोएकौन

नागत विख्याता तिनकहीहोतो और
हीठोरजेहो दूसरीउत्पनमतिनाम
कही आगेयहहोइहे यहबात
कोनुजानै जबहोइगो तबनपाव
करहिगो यहकहीहे जोनपजी आ
पदाकोंनपायकरै सोबुधिवंत जैसै
बनियांकी श्रीऋषभके आगेंजारतु
कायो तीसरीको नामजदभवषि
नृनिपूछीयहकैसीकथाहे उत्पनम
तिकहउहे विक्रमपुरमेंसमुद्रदत
नामबनियांरहे वाकीस्त्रीनाश्री
अपनेंसेवकसोंरहे जातेंश्रीकेके
कबडोननान्हों नयेनयेकोंचाहे
जैसेंगाइबनमेंनयेनयेतृणांचाहे
एकदिनवहअस्त्रीसेवकके मुषचु
बनकरतसादेषी तबवहछिना
रिषभसमकेंआगेउतायलीआयव
ही स्वामीयाहसेवकनराषियेइ

नहीं गचुराइ मांड्यो सेंदा कौं मुष न्यव
हीसूघि देषो॥ वासु आवति हो यह
शुनि सेवक झंरि साय कही॥ जा कैघ
रमें ऐसी श्रीमुष सोधें॥ ताघरमें से
वक कैसें रहै॥ यह कहि सिचाल्यो
तब मारवा कौं मन नाइलाय्यो॥ जातें
हौं कहत हौं जब आपदा होइ है त
बनुयावक रिहौं॥ यह शुनि जदनंद
बिवोली॥ जो नावै नाही सकबऊं
नहीं इ॥ जो नावै है सो बिना नयन र
हिहै॥ कौंन चिंता करै॥ तब बिहान
नये जीवर जाल पसारि दीऊ बांधी॥
उत्पंन मति मुई॥ मुई जो निजाल तें
काढि भूमि मारी॥ तब कछियानी
मंयरी॥ तातें हौं कहउ हौं॥ जो यह ले
उयावक रैसो इष नयावै॥ तातें ऊं
जा आ रसरोवर जावजे॥ आरुदो
ऊ मिलि करऊ॥ उनि कही यैडे मैं

तुमकै सोंजाई हो ॥ जैकछूहाक
हीजैसैंमैउमारीसाथिश्राका
समाग चल्यो जानु सोई विचार
कु ॥ हंसनकही कौंनउपावक
रिये ॥ तबकछुहाकही ॥ तुमऐक
नकरी इनैकैतिदोकुजनपक
रो ॥ बीचतेहोपकरिरहैं ॥ तुमले
उडकु पानी मैंमोकौंलेराषकु हं
सनिकही उपाय तौनी कौहै ॥ यहि
जहांउपाय विचारियेतहांश्रमयकु
विचारिये ॥ जैसैं बगुलाकेदषत्ही
वाकेवालकन्मोलाषाये ॥ कछूहा
कहीयह कैसी कथाहै ॥ हंसकह
तहै ॥ उत्तरपंथमैंकावेरीनदीकैती
र ॥ ग्रीश्ववट नामयचैतमैंएककौ
रूषहै ॥ तारूषपरबगुलारहै ॥ ताके
षोडरमैंसापरहै ॥ सुनिसापबगुला
निवालकषाये ॥ वासौंकतेबगु

लानिरोवतदेषो॥येकबूदेबगुलाकहे
अरेतुमयहकरहुसबमिलिबऊत
मछरीश्रानिसापकेबिलतेन्योराके
बिलतोंपातिकरिराषऊ॥मछरी॥
षाबेकतोनतेंन्योरासापकोंमा
हिगे॥उनिदेसोईकीयो॥तबन्योला
निसापदेषिमास्यो॥तबउनिन्येला
रूषपरबगुलाकेबालकहोतसुने
सुनिकरिरूषचढिमारे॥तातेहोंक
हतुहो॥दोऊबिचारियहिहमको
तोहितेजातदेषिपेडैमेकोऊहसे
श्रोरकछूकहतदे तबतुमबोलऊ
तोगिरियरऊ॥तबमरिहो॥तातेंतु
महांईरहो॥कछुहाकहीकहा
होंबावरोहोंजोबोलिहो॥तबउ
हीभांतितेन्चले॥तबवहिजांतिक
छुहाकोंनरकतेकदेषि॥श्रहीर
सबसंगला

रहतांकछुहाकोवेपंषीलीयेजातहै
जोहागिरिपरैतोहूजिषांहिकाहूक
हाथधरिलेजोहिंतबउनकेकटुवचन
अनिकेक्रोधकरिपछतीबातनहलिके
कछुहाकहीउमत्वाटषानंयहकहो
मुषतेंतर्कनमिलिगयोतातेंनअहीर
नमारिषायोजातेंहोकहतोहोजोमित्र
बचननअनेतोकोबुरोहोइहृदयी
चिजोबगदजासमयदायोकृतोतिन
आइकहीजुगहमेंऋषिनयोकोम
तिराषोतोकोफलनमायोमेघना
मकागगदजासोगीधकोमदायो त
बराजास्यामलेकहीप्रीतितेंनयकार
नेसबकोप्रतीतिनैकरेसोपाछेकषपा
वैजेसेकषपरिकोसोवनलागेगिरे
तबपछिताइनबजासमकहीइहा
तेंआगिलाइकरिमेघबनेगयोतबरा
जाचित्रबर्नसंतोषपाइकरिमेघबनेकं

कर्म रक्षीयकौ राज्य दीजे। जातैं जोसेवग
कार्यकरि आयो होइ। ताकौ कोयो वाक्
रुनमावै नांही। क्रिया करि। मान करि।
बचन करि। दृष्टि करि। वाकौ संतोष
कीजे॥ तब चक्रवाक कही। तो आगै
कहै। तब वह कहतु है॥ वाकौ धन
मंत्री गीध है। राजा यह नबूझिये। वा
कौं और कछू न जादीजे। जातैं जो जि
तनेलाइक होइ। ताकौं तितनौं ही प्य
सादकीजे॥ नीचकौ उपकार जैसौ वा
रूमैकौ मूतिवै॥ अरु राजा बडेकौं।
जा थोरबूझिये सो नीचकौं न दीजे॥
यह कही है। नीच बडो थोरपाइ स्वामी
ही कौं मारण विचारै। जैसें मूसा वा
घ होइकैं मुनीस्वर कौं मारण चल्यो
चित्रवर्न पूछी यह कैसी कथा है॥
तब हरि हसी कहत है। गोतम मु
नि के तपोबन मैं महातप नाम मुनिर
है। ताके आश्रम कैं

कोंछोनाकागकेमुखतेंगिरयो देख्यो
मूसेकोंघानकोंबिलारआवतदेख्यो
पीछेंआपनेतपस्याकेबलतेंवहमू
साबिलारकीयो॥ पीछेंयेककूकरबि
लारकोंघानआयो॥ तबवहेकूकर
कीयो॥ पीछेंवाकोंघकरनेकवा
घआयो॥ तबवहकूकरवाघकीयो
तबवहमुनियहसोमूसाकोंदेख
तोतेसेदेखे तेसोईबाघकोंदेखे॥ अ
रवामुनिकोंलोकसबकहे॥ इनपे
कमूसाबाघकीयोहे॥ यहमुनिकरि
वाघबिचार्यो॥ जोलेंयहमुनिजीवत
हेतोलोकनिकीकहावतिमोसे
यहनछूटिहै॥ यहबिचारिमुनिकों
मारिनेकोंचल्यो॥ मुनिकेंध्यानकरि
वाकीवहबातजानी॥ तबवहबाघ
मूसाहीकीयो॥ तातेंकहतहोंनी
चकोंबडोयहनदीजे॥ औरयहब

धर्म साही कीयो॥ तातें ऊंकहतु हों नी
चकों बडो पद न दीजे॥ और यह ना
तश्रुगम नाही॥ सुनिये क बगुला बडु
तमछरी छोटी बडी षाइ कहि॥ अपु
डे मानये मासषाबिको बिचार करि
के कढाकों धरतके कढां मार्यो ए
जाक ही यह कैसी कथा हो॥ गी धक
इ तहो॥ मालव देसमें यक पद्मगर्भ
नाम सरोवर हो॥ तहां यक बडो बगु
ला॥ असमये आपकों अनुहे गी सो
जनाइ करि रह्यो॥ सुइ रतें यक के ए
कढा दिष्यो॥ अरु पूछ्यो तू को हो॥ अहा
रछाडि इषी मिरइ तहो॥ मिरी मछरी जीव
नि आजु इन मछरीनु कें जीवर आइ
कैं मार हिगे॥ यह जीवर को बिचारन
गरमें सुन्यो॥ ताते हों अबों आहार बि
नम रिहों॥ यह जानि मैं आजु ही तें
आहार छाडो॥ तब तालमें की मछ

री विचारयो॥ यहसमैंहमारो यहबक
हितूसो लागतहै जो हमकों करणों
होइसोयाहीकों बूझियै जातैं यहक
हैदै सङ्गुनयकारकरैतो ऊबासो
संधिकरियै जातैं नयकारमित्रको
लक्षन॥ मछरीनकहो कैसैं तुम
हमकोराखिलेऊ॥ तबबकक्हो
एकउपायहै होइहातैंओरपानी
मैंलैराखऊ॥ मछरीनडरतैंकहीलै
राखऊ॥ तबऊबकयेकएककें
सबमछरीखाई॥ आगैंकेकदाच
कसोंकही॥ अरेबकमोऊकोंलैउ
हांराखऊ॥ तबबगुलानयेमासधा
बकीइछाकरी॥ आदरसोवाकोले
चल्यो॥ तबबककरियकस्यो केक
टानुहांमछीनकेहाड काटिदिबि
चारेो॥ सुयोतोहोआगेो॥ अबऊ
हसमयकरनोंहोइसुकरौंजीतैं॥

जोलोंडराईयेतोलोंनयनआवै
तबडरआयोजांनियै॥तबडर॥
छाडिमारियै॥औरआपकोंमा
रनआयोहोइ॥जबरिबकोंनया
यकोंनदेखियो॥तबलाइकरिम
रियै॥औरजोजुधनकरोतोमर
निःसंदेहहै॥जुधमेंमरिबकोंसंदे
हहै॥कहाजांनियेआपहीकोंमा
रियै॥यहजांनिश्रेससमेंयजुधन
लो॥यहबिचारिबगुलाकोगरो
काद्यो॥तातैंहोंकहतहोंअपू
बबस्तेबगुलामुयो॥तबचित्र
बर्नकही॥सुनिलोमंत्रीमेंयहबि
चारीहै॥मेघबर्नजोइहांकोरा
जाकरियै॥तोइहांकीभलीभली
बस्तहमकोंपठवतरहैं॥तबव
हांतहमविंधिवनमेंसुषीकेरहैंगी

धरसि करिकही॥ जोआगलीबा
तकै बिचारै तैंसुषमानैं॥ सोसुषी
होइ॥ जैसैं कुम्हार कैभाडे फारि
ब्रह्मणसुष पायो॥ राजा कहीय
हकैसी कथाहै॥ मंत्री कहतुहैरा
जाएक कोकनंद नामनगरहै॥
तहां देवसर्मा एक बाह्मनरहै
तिनमेंष संक्रांतिकोएक करवा
सात सोपायो॥ वहनेकरिमाटी
नकेबासनभरेकुम्हारकैंघरस
तो॥ बिचारतभयो॥ बेचौंतौंदस
कोडीयांकूं॥ धनकोडीनकोश्री
रसरचालिंग॥ इहभांतिजबमेरे
बकृतपूंजीहोइ॥ तबनारियर
सुपारीमिरचबडोव्यापारकरि
लाषनिदामनृपराजो॥ दामनया
जिचारिव्याहकरौं॥ तबवेश्रीई

षी कि आगें कलह कि हौं। तब
हौं क्रोध कि लाठी न मारिहौं॥
यह मनोरथ कि लाठी लाऊं त
बआपनें सात को करवा फूटौ।
और कुम्हार के वासन फूटे॥ तब
कुम्हार यह सबद सुनि धरती त
रतें निकस्यो॥ निकलि वासनका
ढिदयो॥ कपरा छिनाऊ लयो। ता
तें हौं कहत हौं आगिली चिंतानक
रियै॥ तब राजा ये कोतक निगीध
सो कही॥ बा वा अबजुकरनहूं कि
यसो कहो॥ गीध कही जो राजा ग
वी मुर्ख होइ॥ ताकें आगें जो मंत्री
होय ताकी लोग सबनिंदा करै हि
जे सें मद को हाणी सा करी गती
मेचलै॥ सब लोग महावत को गा
रीदेहि॥ और सुनो॥ राजा यह ग
दतु म आपनें बलतें तो स्यो॥ कि

धो तुम्हारे पक्ष तापक रहे मारेउ या
यतें टटो ॥ मंत्री कही हमारो कह्यो
करो ॥ तो तुम्हारी जीति ह्वै है ॥ अ
पने घर कों चलो ॥ नाहीं तर बैरी क
ल सिर पर आयो है ॥ सत्रु बराबरि
को है ॥ अब जो या सों अटकि यो तो
पराई भूमि में निकसिबो कठिन
होइ ॥ मुष की मिलह लै मंत्र कर चलि
ये ॥ गढ तो स्यो ज सत्रयो ह्वय या यो ॥
अब चलिये ॥ मरो तौ बिचारयो है ॥
जातें मंत्री धर्म राषे ॥ राजा की सुह
वती अ न सुहावती ॥ बिन विचारें क
है ॥ जब राजा कों कार्ज आ इ परै ॥
अ सो मंत्री राजा की सहाय जो नि
यो ॥ और जो बराबरि को होइ ता सों
प्रीति करिये ॥ जातें जुध में सदा है
षा डे की हुहो कों ति धा रहै ॥ और मि
त्र धन राज्य ॥ अ पन पौ की ति इन

कौ संदेहमैं मैं निजुध करिये सुकाहे
कौं॥ तबराजा कहीयहबातअैसी
यहै॥ तौपहली काहेन कहीं॥ घरही
बैठिरहते॥ मंत्री कहीतबहमारेव
चनतुमआदिअंतिलौंनसुणेमेरे
बिचारियहलोही बिग्रहकीनऊती
जातैंराजा हिरन्यगर्भके गुनआति
ही करिबेलाइकहीं॥ याकौ बैरनबू
झिये॥ जातैंजोसत्यवंतआपतैंबडो
धार्मिक॥ जाकेनाइबऊहोइबल
वंतहोइ॥ अनेकयुद्धजीत्योहोई॥
डरनहोंहिं॥ इनसातऊसोंप्रीति
करिये॥ सोआपबंसत्यागिबेकौ
वाबोलतनटैते॥ बडोहोयसुजा
नऊकौंसंकटपरेबुरोनकरैधर्मि
कस्योंजीतिबोकठिनजातैंसबऊजा
वाकेमनेहतेवाकेंसंगलागेनरहि
जबआपनोंबिनासजानियेतबइए

कुसोंप्रीतिकरिये॥ नातरुओरक
कालगमावै॥ वाकोआश्रैनक
रै॥ औरजैसैंगाढीमाटीकाटैनक
रिबेढीहोइ॥ तौत्तैंनसकिये॥ तैसै
भाइनकरियुक्तराजाजीत्यौनजा
य॥ बतीसोंसंग्रामहूकियेनाही
जातैंमेघबयारिकैसामहैकबहु
नचलैं॥ जोअनेकसंग्रामजीत्यो
श॥ ताकेप्रातपहीतैसबहारिमान
हि॥ जैसोंपरसरामकेनामहीतैंस
बक्षत्रीभाजहि॥ औरजोग्वासोंमि
त्यौरहै॥ ताकुकैंबसिसबमत्रहै
हि॥ याराजामेंयेसबगुनहैं॥ तातै
यासोंसंधिकरिये॥ तबयहसुनि
चक्रबाकजासूससोंकही॥ बक
तुमबकुरिजाऊ॥ औरसंचारहो
हिसुजानिआव॥ आगैहंसचक्र
वाकसोंपूछी॥ मंत्रीजासोंसंधिन

नकरिये ताहि हेज्यानयोंचाहतहै।
मंत्रीकीहीकहो राजसुनक्र॥बालक
वृद्ध॥बडोरोगी॥जातिसोंवादरिहो
ह॥कातरजाकैनलेज्ञानहोंदि
लोनीहोइ॥जाकैअधिकारीलोभी
होइ॥जाकोवैराग्यपक्कहोइसदा
नागहीमैंआसक्तरहै॥स्थिरचित्तन
होइ॥जोमंत्रैकरै॥देवब्राह्मणकी
जोनिंदाकरै॥असिधिहोइ भागकी
निंद्याकरै॥इनिष्यकरिपीडितहो
इ॥जाकोकटकदुषीहोइ॥जोअ
यनैंदेसतैछूटोहोइ॥जाकैबंकत
वरीहोइ॥ताकोमरननिकटजानि
ये॥चंचलचित्तहोइ॥धर्मसत्यकरि
दीनहोइ॥संग्रामनकरिजायेहोइ
यैतीवीससोंसंधिनकरिये॥युधकरि
मारिये॥बालकसोंसंधिनकरिये॥जा

पिकोऊनतरै जातैं बालकदंड
प्रसादनकरिसकै जातैवृधअरु
रोगीयेदोऊछाड़ि सक्किकरिदी
नहोंहि आपहीतेऊपावहि जो
जातिहीनहोई सोसुषहीमारिये
कातरजुधतैं आपहीसाजै जाके
लोकूकायरहोहि तेयुधमेंछाडि
जाहि लोभीश्रेतिभाजि जाहि जा
कैलोभीहोंहि ताकौंदैलोगही
मारैं बैरागीकौंअजाइरहीतेछा
डै जोभोगकरिश्रासक्तहोई सो
सुषहीमारिजै जुएकचित्तहोय
मंत्रनकरै ताहमंत्रीछाडहि जु
देवब्राह्मनकीनिंदाकरै सोअ
धर्महीतैजाय जाकोकटकऊ
षीहोई सुकेमैंजुधकरहि जा
तेदेसछूटोहोइ सुछोटेऊसत्रक
रिमारिये जैसैंपानीमैंनऊछोटो

बड़े हाथी कौं लेजा झा जा कौ बल
तस व्है झा सो जहीं जाय तहीं मा
रिये॥ समै बिना जो नैं जो बल तैं से
ना सहित छोटे हू सत्रु सों संग्राम
करै सो हारै॥ जैसे कौ दा रा नि बि
षै अ तू षसे संग्राम करै मनै जैसे
अधियारे मैं आरसी॥ जो सत्य धर्मी
क रि ही ना॥ ता सों झा नि क रिये तौ
न रहै॥ और सु नि॥ संधि क रिये धी
त्ति॥ विग्रह क रिये बैरा आमन वै
छि बो॥ जा नु जात्रा॥ द्वै बेध क रिये
भेदा आ प्ने क रिये ना जनु पिये छ गु
णा राजा के ह हि दि ल कौ जा नि बो
सबही कर्मन कौ क रिबो॥ उपाद
मनुष्य की और द्रव्य की संपदा जो
उष आवै॥ ता कौ न साय वै नौ उ
पाय जानैं॥ समय की

चौमंत्रकेअंग। साम। दान। दंड। भेद
एचारिमत्र बसिकरिबेकौनुपाय
उछाहसक्ति। प्रभुताकीसक्ति। ऐती
निसक्ति सबन्त्रपनीपरई बिचारि
कैंतौसत्रुपरिचढ़िये। तौजीतिये।
जातैंजोलछिमी प्राणऊकैंदीयेनपा
ईये। ऐसीचंचलालछिमीनीतिमा
र्गसदाचलै। ताकैंआपुही घरबैठै
आवै। जाकैंदबिकोघरचजहांजि
तनोंबढ़िये। तहांतितनोबंधानहो
य। जासूसी अरुमंत्रगुप्तहोइ। काऊ
सोंअप्रियबचननकहै। साराजाआ
समुद्रीतप्रिथीकोराऊरहोइ। राजा
जदिपिमंत्रीसंधिकरनकह्योहैतौ
ऊजयंकेग्रबकरिराजाअबहीवाकौ
कह्योनमानिहै। जातैंजोहोंकहौंसो
करऊसंधलनदीयकोराजामहाब

तनामा सारसोहमारो मित्र है।जं
बूदीपमेंमंडलकरो।जातेआय
नीसेनाकी रक्षाकरि।सबुकीसे
नाकोआगेंपाछेंरातिदिनकरि
मारिकष्टदेहगे।।जातेंदोऊता।
तेहोंहितोमिलहि।जैसेंतातेंकी
योनोहमिले।।राजाकहीअैसाये
करऊ।।तबचक्रबाकबिचित्र
नामबक:कागलदैगुप्तहीसंघ
तघीकोपठायो।।इहबीचिजासु
सबगुलाआनिकही।।सुनियेक
नहांकेसमाचार।। नहगीधकही
राजासोंयहमेघबर्नकागगद
मेरह्योहैबऊतदिना।वहराजा
हंसघीनिकरिबेलाइकहैकि
नाही।।तबराजाकागबुलाईपूछे
कैसोवहराजाहै।कैसोवाकोमं
त्रीहै।

राजा हंस सारस पात्र इंद्रे मंत्री चक्र
वाक सो मैं नाही देख्यो राजा कही
तौ तैं कैसें वाकों डह्यो अरु ग
दमैं त कैसें रहन पायो राजा तुजा
की प्रतीति करे ताकें डह्क तैं को
न वार जैसें जाके गोद में सुसोवे
सुता कों जैमारे तो वह का करे
राजा सुनो उनि चक्रवाक मो कों दे
षत ही जान्यो परु राजा बड़ो मह त
तातैं मैं डह्यो जातैं आपनी उप
मा कों जो उ जैन कों सत्य बक्ता करि
जानें ताकों सहु डह्कै जैसें ब्रा ह्म
ण छाग नि मति ठग्यो राजा कहीय
ह्कैसी कथा है कागकहत है
गौतमा रन्य में एक ब्राह्मण जग
करिबो रागा ह्तैं एक छागमो लि
नयो आवत ती नि ठग नि देख्यो
तब वे त्तीन्यि ठग आगें जाइ यें मे

मंजुदेजुदेवेवेती नौरूपतरा तब
वहब्राह्मणयेकहिठगपूछ्यो। ब्र
ह्मब्राह्मणयहकूकरकांधेपरचढा
येकहानीयेजातहै।इनिकहीयह
हकूकरनहोई।बुकराहै। आगे
कासयेकपरहसैरकुंहहीभांतिह
छ्यो।यहसुनिब्राह्मणछागकोंन
तारिदियो।बहुरिकाधेतेसंदेहक
रतचल्यो।जातेंदुष्टनकेबचनतें
साधकूकीमतिसंदेहमेंपरै।जोदु
नकेबचनकीप्रतीतिकरैसोमरै।
जैसेंचित्रबर्नमुयो।राजाकहीय
हकैसीकथाहै।कागकहतहै।
कोंनकुंदेसमेंबडेबनमेंयेकामदो
त्कटकासिंघरहै।ताकेसंग का
गबाघस्यारयेतीन्यो।बनमेंफिर
तयेकगंदेख्यो।।ग
मक क

टश्रापनैं समाचार कहे हौंमंग
तैं नृलिश्रायो हौं नृनिवहले।
सिंघकौंदीयो॥ संघवाकौं श्रनैदा
नदैकरि चित्रबर्नानाम धरिकैंरा
ष्यो॥ एकसमय श्रतिवृष्टिसंघकौं
बिनश्राहारपायेबिग्रतादेषि॥ इन
तीनकुं विचारो॥ जैसैंचित्रबर्नकौं
संघमारै॥ सोऊपायकरै॥ यहक
हिदिषाइ॥ यातौंहमारोकहाका
जैसरिहै॥ तबव्याघ्रकही॥ राजाय
हश्रनैदानदेराष्योहै॥ कैसेंमारि
है॥ कागकही॥ इहिसमैराजाछी
नराजापापहुंकरिहिं॥ जातेमूषी
डाकिनिश्रपनैंबेटाकुकोंषाइ॥
मूषीसापनिश्रपनैंश्रंडाषाइ॥ म
षोकोंनपापुनकरै॥ जाकीछीन
मनुष्यकैदयानाहीरहति॥ श्रोरम
दकरिमातोहोइ॥ श्रसावधानबा

वरौक्रोधी॥अग्यानी॥मूषोलोभी॥इ
रानौंउत्ताइलौ॥कामीयेसबधर्मकौं
नकौंनजानहि॥यहविचारकरि
तीन्योसंघकीनिकटगये॥तबका
गकहीराजाबकुतजतनकरिषो।
ज्यो॥परुआहारकछुंनाहीपायो॥
संघकहीतोअबकैसेंजीवहिगो।का
गकहीराजाहाथकोआयोआहारखाइ
तहो॥तातैंऔरछुंठोरनांहिनैंपाइयतु
संघकहीइहांकोनुआहारहो।काग
कानमैंकही॥यहचित्रबर्नहै।मारि
षाईयै॥तबसंघकहीमारियेकैसें॥
मेयाकौआनेदांनदीयोहै॥जातैंयह
कहीहैनीतिविषोंन्नमिदान॥सर्बदां
न॥अंनदान॥आतमदांन॥एसबदा
नअन्नदानकीबराबरिनकरिसकै
औरसबविधिकरियुक्तआस्वमे
धजगपकीयेफलहोइ॥ २

नागत राषैं होय॥ तबकाग कहीरा
जातुममतिडरऊ॥ हमन्याइकरि
हैं॥ जोयाआपनोसरीरआपनीही॥
देहो॥ सिंघयहसुनिचुपकैरह्यो॥त
बकागसंघकोमनुज्ञानि॥ कपटक
रिसबहीकोलैसिंघकैंनिकटगयो
कागराजासोंकही॥ राजाआहारकं
ऊनाहीपायतु॥ मोहिमारषाऊ॥ तुमब
ऊतदिनकेभूषेहो॥ जातेंजोराजानहो
ऊ तोप्रजाकैसेंजीवै॥ जैसेंआयुर्दनि
नाधन्वंतरिनजिवाइसकै॥ औरसबप्र
जाकोमूलराजाहै॥ वृक्षकोजोमूलर
हैतोआगेंसबपत्रफूलहैंहि॥ सिंघक
हीबरुमरियेसुनलो॥ औसोकर्मन॥
लोनाही॥ पीछेंमारऊ॥ कागकीसीबा
तकही॥ सिंघपुनिकहेउत्तरदीनों॥त
बचित्रबर्नराजाराजासोंकही॥ राजामे
रोसरीषाऊकरिआपनोंप्रानराषि

यो॥ यह कहत ही स्यंघ का कोप टफा वि
पायो॥ तातें हों कहत हों॥ दुष्ट के व
चन तैं मले कुं की बुधि चली॥ तब तीस
रे ठगि कह्यो॥ अरे बांनन यह कूक
र कांधे पर काहे लयो है॥ तब ना को
कहे बांनन बोकरा कुं छांडि भ्ल
नक रिघर गयो॥ जनत नि कुल मिलि
बोकरा मारि षायो॥ तातें हों कहत हों
आपनी उपमां करि और की बनी ति
करै सुड़ कावै॥ राजा कही सेघव
नेतुम बहुत सच नु मैं के सेंरचो अ
रु कैसी सैंनन सों प्रति की नी॥ कागक
ही राजा स्वामी के काज कों॥ अरु आ
पने काज कों कहा ना ही करियइ
नदी तट के मूल कों क्षेवत ही वहा
वै॥ अरु बुधिवंत होइ सु अपने का
जकों सधु कांधे पर चढ़ा ले नि मैं॥
बूडै सांप करि वहत

रे राजा पूछी यह केसी कथा है ता
गक कहत है जीर्णोद्यान नाम बन
में मंदावी नाम यक सरपर है शुभ्र
तिबूटो आहार कों फिरिनसकें
तातें कीतीर रहे येक मीडुक ह
ही ते वासों कही तुम आपकों अ
हार नाहीं खोजत परई रहत हो
सुकाहे ते तब सापक ही जाऊ
कहां मो अनागि कों पूछत हो व
हि हठ करि आश्चर्य ते पूछो तब
सर्प कही या ब्रह्मपुर में कोइम
नाम ब्राह्मण को पुत्र वीस वरष
को अति गुणी मे अनाग पते वा
को काटो वा कों मूर्छित देखि सांक
तिन मिल्यो या छें वा गांव के बा
सी भाई बंध सब मिलि तहां आये
जाते सुष में दुष में सत्रके युध में रा
जद्वार में समसान भ्रम में जो संगर

है।सोबंधु जानि।तहांयेकक मिला
मब्रांम्हणा कही।।अरेकोऽन्यत्म्र
षेहहि।जोइहमातिरावत्तहोजाते
जोनयज्यो जाकोंमृतिनिश्चेहै।।और
सकलसुखशोकहियतहै।सुनि
यहसोकजातेंनयज्यो।।ताकोंपह
तैंमृत्यकी गोदबैठेहै।पीछेमा
ताकी गोदबैठै।जैसेंबालकपहलैं
आपतेपीछेंमहतारीदेखै।।ऐसेमनुष्य
कौसोककहाकीजै।।औरसनासहि
तबड़ोराजाजुधिस्थिरआदिदेसब
कहांगये।।उनकेवियोगकीमाबिदै
नकौंभूमिरहीहै।।सरीरकोंमृत्यना
रहै।संपदाआगैंहीआयदाहै।संजो
गकैंआगैंवियोगहै।।तातैंनयज्योसो
नासिहै।।औरयाहीघरीघरीघटतु
है।।मूयेहीगयेंजानियतुहै।जैसेंका

चौघटुपानीमेंघरीघरीघुरै॥फूटैं
हीजांनिये॥ओरजाकोंजनमन
यो॥ताकोंमृत्यघरीरनीरैआवति
है॥जैसेंअपराधीकों॥राजआग्ग
मानिमास्विकीठोरलैचलैं॥तब
वाकोंवाठोरयगयगनीरैआवै॥
ओरजोबनरूपद्रव्यकोसंग्रहजी
वनठऊराई॥मित्रनकोयेकठोर
बास॥ऐसबअनित्यहैं॥तातेंपंडि
तहोइसुसोकनकरै॥जैसेनदीके
प्रवाहकेवेगकेरिकझंकेकाठए
कत्रमिलहि॥बहुरिवाहीकेवेग
तेंन्यारेन्यारेहोंहि॥तैसेंप्राणीकेवे
गकरिएकत्रहोंहि॥अरुन्यारेहोंहि
जैसेंपंचमहाभूतएकत्रमिलहि॥
तबदेहउपजै॥वेयाचौंन्यारेहोहि
तबदेहीजाय॥ओरीदेहकेउपजे

नसानैंपंडितहोइ।सुखनकरै॥
तातैंमनुष्यजाबस्तमैंजितनौ
स्नेहकरै॥तितनौंसोकको बी
जबोवै॥यासंसारमैंकाऊसौंस
दायेकउरहिवोनांही॥आपनी
देहसौंसदासंगनाही॥औरसौंक
हातेहोइ॥संजोगयेकदिनबियो
गकरै॥जैसैंजन्ममृत्यकोआगमक
है॥आपनेभाईबंधनकोमिलिवो
मिलहीमैंनीकौ॥आगैंबिछुरैंऊष
दइ।जैसैंअपथ्यबस्तुषातहीछि
णमीठी॥आगैंरोगउपारजो।जैसै
नदीकोप्रवाहजाइपैफिरैनाही
संसारमैंसांधसंगति॥सबसुखतै
अधिकहै।परिसोकबियोगरूप
षाडेकरिकाटौहै।तातैंयहबडौ
दुषहो।पंडितमृत्यकौंसमझिसब
हीदी

तादिनतैं मृत्यहीसों सामहोदौरत
है॥तातैं संसारमैंकीयहगतिहै
जानिसोकनकरैसोमूर्ख॥जोअज्ञा
नसोककोकारणहै॥वियोगेका
रणहै॥तैसेंगेदिनबाहै॥घटैकै
सें॥तातैंअज्ञानैंकारण॥दिनकैं
जातअयानकैंघटेसेकोघटैता
तैंआत्माकोंबिचारकरिसोक
छाडियै॥जातैंअकस्मातुहीला
गै॥आतैंमर्मकोनैंदै॥ऐसोजसो
करूपीघावताकोंनमुफियेवि
सारिहीडारियेयहैऔषध॥तबको
ऽन्यनविकरिबोल्यो॥तोअबगृह
रूपीनमैंवासपरयो॥अबहोंबन
हींजैहौं॥कपिलमुनिकही॥अनु
रागीकोबनकमैंदोषनयजै॥जितैं
त्रियघरहूमैंरहैतोदोषनांही॥जो
फलकीवांछाछाडिदेकैकर्मक

रिविस्नकौंनजै॥ ताकौघरबनज
तैंअधिकहै॥कौंनजंआश्रमैंरहै
डुषौयाडकरिजोधर्मकरतहौंस
बजीवमैंदयाकरै॥सोईतपसी॥
जानियै॥यहअौरजकहीहै॥जोय
गयाबिबेकौंआहारकरै॥संतति
कौमैथनकरै॥सत्यबोलिबेकौ
बचनकहै॥तेसबडषकौंतिरहि
यहकहीहै॥आत्मारूपीजोनदी
तातैंस्नानकरहि॥कैसीहैनदी॥
जहांमहाभारघाटहै॥सत्यरूपी
जलहै॥सीतलरूपकरारेहैं॥दया
रूपीतरंगहै॥जातैंयानीकेन्हाये
अंतहकरनशुद्धनहोइ॥अौरसु
नु॥जन्ममृत्यु॥बुढाइ॥बिदनक
रिव्याप्तयासंसारमैंकछुसारनां
हीं॥डुषहीकौंसबसुषकरिमान
तहैं॥जिसैभारवाहकभारकौं

उत्तरे सुषकरि मानें॥ तबकोंडनि
कही यह बात नि श्रेमी है॥ नृनि
ब्राह्मण मो कों आय दीयो॥ आ
जुतें तू मेंडक नि को वाहन हो हि॥ न
तब ब्राह्मण कही॥ कोंडन्यते रेह
दो नृपदेस को जोग्य हो॥ अब नृप
देस सुनि॥ संगम र्ब्या छाडिये॥
जो न छाडिये करि यें तो॥ साधसंग
ति करि यें॥ जाते साध को संगस
ब संगतें छिडावै॥ यह सुनि वह
ब्राह्मण को धछांडि संन्यासी न
यो॥ तब तेऊ ब्राह्मण को आप नो
गवे नि मति मेंडुक नि के नि वाह
करन ऐहां आयो है॥ तब वह जल
तपाद नाम मेंडुक नके राजासो
यह वृत्तांत कह्यो॥ सुनि करि रा
जा जलपाद सर्प की पी ठि पर चढो
तब वह सर्प वाकों पी ठि पर चढा

